जयगुरुदेव

अमर सन्देश

सतगुरु की अखण्ड वाणी द्वारा जीवन में ही
अमर पद प्राप्त कराने हेतु मार्ग दर्शन वाली पत्रिका

वर्ष २१ अंक ६
जनवरी १९७९
[वार्षिक मूल्य १०)

॥ जयगुरुदेव ॥

अमर सन्देश

[सतगुरु की अखण्ड वाणी,
जीवन पथ की कहानी।
जीवन सुधारक वाणी,
जीवों की भव पार कहानी॥]

वर्ष	अंक
२१	९
जनवरी	सन् १९७९
माघ	सं० २०३५

प्राप्ति स्थान

व्यवस्थापक अमर सन्देश

२३ पाण्डेय बाजार

आजमगढ़ (उ० प्र०)

प्रकाशक

चिरौल सन्त आश्रम

कृष्णा नगर

मथुरा

टेलीफोन नं० १३०६

सम्पादक

विश्वनाथ प्रसाद अग्रवाल

वार्षिक मूल्य

१०) रू०

एक प्रति का मूल्य १ रू०

अमर सन्देश के नियम

❀ अमर सन्देश हर माह की २६, २७ तारीख को प्रकाशित होता है जो पाठकों के पास माह की पहली तारीख या उसके पहले मिल जाता है।

❀ जिस माह की १० तारीख तक उस माह का अमर सन्देश न मिले तो अप्राप्ति की सूचना भेजें। सूचना ग्राहक संख्या तथा अपना पता सही और साफ जरूर लिखें। यह भी लिखें कि कौन सा अंक नहीं मिला। ऐसे लोगों को माह की २६ ता० तक अमर सन्देश भेजा जाता है।

❀ अमर सन्देश का नया वर्ष अब मई से आरम्भ होता है। जनवरी से नहीं। मगर आप किसी भी महीने से ग्राहक बन सकते हैं। इसलिए नये ग्राहक मनीआर्डर कूपन पर अवश्य साफ साफ लिखें कि वे किस मास से ग्राहक बनना चाहते हैं।

अमर सन्देश तथा अमर सन्देश की फाइलें पुस्तकों के साथ नहीं भेजी जा सकती क्योंकि अमर सन्देश रजिस्टर्ड पत्रिका है। इसका डाक का नियम अलग है अतः उसके लिए डाक खर्च प्रति फाइल दो रुपया अलग से भेजें। इस समय फाइल सब खतम हैं।

रुपये तथा पत्र भेजने का पता:-
व्यवस्थापक—
'अमर सन्देश'
२३, पाण्डे बाजार,
आजमगढ़ उ० प्र०

Scanned with CamScanner

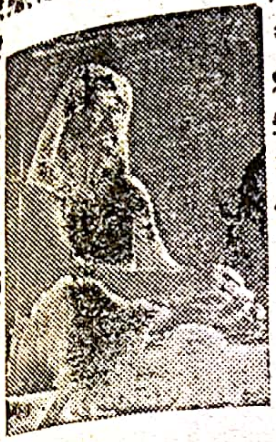

स्वामी जी ने कहा

तीन बातें सदैव याद रक्खोः—

(१) किसी की निन्दा न करना न सुनना। निन्दा करने से उसके पाप के बोझे से तुम दब जाओगे।

(२) कम खाओ इससे आलस नहीं आयेगा शरीर तन्दुरुस्त तथा चुस्त और फुर्तीला रहेगा। साधन भजन ठीक बनेगा।

(३) गम खाओ अर्थात बर्दाश्त करो। कोई कुछ भी कहे उसे सहन कर लो।

वर्ष २१ अंक ९] जनवरी १९७९ वार्षिक मूल्य १० रु० [एक प्रति १ रु०

अटक तू क्यों रहा जग में

अटक तू क्यों रहा जग में। भटक में क्या मिले भाई॥ १ ॥
खटक तू धार अब मन में। खोज सतसंग में जाई॥ २ ॥
विरह की आग जब भड़के। दूर कर जगत की काई॥ ३ ॥
लगा लो लगन सतगुरु से। मिले फिर शब्द लौ लाई॥ ४ ॥
छुटेगा जन्म और मरना। अमर पद जाय तू पाई॥ ५ ॥
भाग तेरा जगे सोता। नाम और धाम मिल जाई॥ ६ ॥
कहूँ क्या काल जग मारा। जीव सब घेर भरमाई॥ ७ ॥
नहीं कोई मौत से डरता। खौफ जम का नहीं लाई॥ ८ ॥
पड़े सब मोह की फाँसी। लोभ ने मार धर खाई॥ ९ ॥
चेत कहो होय अब कैसे। गुरू के संग नहिं धाई॥ १० ॥
काम और क्रोध बिच बिच में। जीव से भाड़ झोंकवाई॥ ११ ॥
गुरू बिन कोइ नहीं अपना। जाल यह कौन तुड़वाई॥ १२ ॥
कुटुम्ब परिवार मतलब का। बिना धन पास नहिं आई॥ १३ ॥
कहां लग कहूं इस मन को। उन्हीं से मास नुचवाई॥ १४ ॥
गुरू और साध कहें बहु विधि। कहन उनकी न पतियाई॥ १५ ॥
मेहर बिन क्या कोई माने। कहैं राधास्वामी यह गाई॥ १६ ॥

Scanned with CamScanner

बचन हुजूर महराज

अभ्यास में तरक्की की परख और पहिचान और वर्णन उन संयमों का जिनसे अभ्यास दुरुस्त बनें

१–बाजे सतसंगी ऐसा ख्याल करते हैं कि उनको किसी कदर अर्से यानी दो चार वर्ष सन्त मत में शामिल होकर थोड़ा बहुत अभ्यास करते गुजर गये; पर उनको अभी कुछ अन्तर में खुला नहीं या कुछ तरक्की अभ्यास की मालूम नहीं होती।

२–जवाब इसका यह है कि यह ख्याल इन सतसंगियों का दुरुस्त नहीं है। उनको अपने हाल की परख नहीं है या वे अपने पिछले और हाल की हालत और तबीयत की जांच नहीं करते, क्योंकि जो कोई सच्चे मन और सच्चे शौक के साथ सन्त मत में दाखिल होकर प्रेम के साथ थोड़ा बहुत अभ्यास दो मर्तबा हर रोज सुरत शब्द मार्ग और सुमिरन और ध्यान का कर रहा है, तो मुमकिन नहीं है कि वह सतगुरु दयाल की दया से खाली रहे यानी उसको थोड़ा बहुत रस और आनन्द भजन और ध्यान का न आवे।

३–रोशनी और माया के चमत्कारों का नजर आना, यह भी एक किस्म की दया में दाखिल है और उससे किसी कदर तरक्की अभ्यास की पाई जाती है। पर अभ्यासी को मालूम होना चाहिये कि सफेद रोशनी का चांदनी के मुवाफिक खिले हुए नजर आना या पांच रंग की रोशनी जुदा जुदा दिखलाई देना या सूरज और चांद और तारों का नजर आना, तरक्की का निशान है। मगर जो मकानात या बागात या सूरतें मर्द और औरत की नूरानी नजर आवें, इनमें ज्यादा मन लगाना या अटकना नहीं चाहिये और न उनके बार बार नजर आने की ख्वाहिश करना चाहिये क्योंकि यह कैफियतें वक्त गुजरते अभ्यासी के मन और सुरत के खास खास मुकामों से जरूर दिखलाई पड़ेंगी और जल्द गायब भी हो जावेंगी।

४–असली तरक्की का खास निशान यह है कि अभ्यासी को भजन और ध्यान में थोड़ा बहुत रस और आनन्द आवे यानी मन थोड़ा बहुत निश्चल हो कर अभ्यास में लगे और शब्द पहिले मुकाम का दिन दिन साफ और नजदीक सुनाई देने लगे और वक्त अभ्यास के मन और सुरत किसी कदर रसीले होकर शिथिल होते जावें और कभी कभी इस कदर अन्तर में लग जावें कि इस तरफ की खबर और सुध न रहे।

५–ऐसी हालत बगैर मन और सुरत के सिमटाव के या थोड़ा बहुत ऊपर की तरफ चढ़ने और शब्द या स्वरूप से मिलने के, नहीं हो सकती है। फिर जिस किसी की ऐसी हालत रोजमर्रा या कभी कभी होती है, तो समझना चाहिये कि उस को सतगुरु दयाल जैसा जैसा उसकी चाल के मुवाफिक मुनासिब समझते हैं, तरक्की देते जाते

Scanned with CamScanner

हैं यानी सिमटाव और चढ़ाई उसके मन और सुरत की करते जाते हैं और उसका नशा भी उसको अपनी दया से थोड़ा बहुत हजम कराते जाते हैं, नहीं तो इस कदर रस पाकर बहुतेरे अभ्यासी मस्त होकर घरबार और कारोबार छोड़ने को तैयार हो जावें।

६–जो किसी को अपने अभ्यास के समय ऊपर की लिखी हुई हालत की पहिचान कम होती है तो सबब उसका यह है कि उस अभ्यासी को गुनावन यानी ख्यालात अक्सर भजन और ध्यान में सताते और विघन डालते रहते हैं। इस वास्ते उसको चाहिये कि वह अपनी एक दो वर्ष गुजरी हुई पहले की हालत तबीयत को, साथ अपनी हाल की हालत के; मुकाबला करे, तो जो वह सच्चा सतसंगी और सच्चा अभ्यासी है, तो उसको और उसके घर वालों को इस कदर जरूर मालूम पड़ेगा कि पहले की निस्बत उसकी तबीयत संसारी लोगों के संग में और संसारी व्यवहार और कारोबार गैर जरूरी और गैर–मामूली में कम लगेगी और दुनियावी ख्यालात भी उसके दिन दिन किसी कदर कम होते जावेंगे और फिजूल और गैर–वाजिब चाहें और तरंगे दुनिया के भोगों और मुआमलों की भी कम होती जावेंगी और सतसंग और बानी और बचन में, और भी गुरू और साध और सच्चे मालिक के चरनों में, प्रीति और प्रतीत पहले से किसी कदर ज्यादा होती जावेगी।

७–जो ऊपर की लिखी हुई हालत किसी अभ्यासी सतसंगी को एक या दो वर्ष के अभ्यास के बाद मालूम पड़े तो फिर इससे ज्यादा और सबूत दया और तरक्की का क्या चाहिये ? असल मतलब सन्त मत और उनकी जुक्ति के अभ्यास का यह है कि दुनिया की मुहब्बत और चाह दिन दिन कम होवे और मन और सुरत सिमट कर किसी कदर ऊपर की तरफ चढ़ने लगे और अंतर में थोड़ा बहुत रस लेने लगे, क्योंकि बगैर सिमटाव और चढ़ाई के हालत मन और इन्द्रियों की कभी नहीं बदल सकती है।

८–पर मालूम होवे कि कुल्ल मालिक सतगुरु दयाल अंतरयामी सबके हाल और ताकत को खूब जानते हैं और उस के गृहस्थी कारोबार और रोजगार की सम्हाल के साथ जिस कदर उसकी ताकत हाजमे की देखते हैं, उसी कदर उसके मन और सुरत का सिमटाव और चढ़ाई आहिस्ता आहिस्ता करते जाते हैं। जो कोई जल्दी के वास्ते अर्ज या फरियाद करे और उस जल्दी में उसके किसी कारोबार का हर्ज या जिस्मानी तकलीफ का अंदेशा है तो ऐसी अर्ज या फरियाद को फौरन नहीं सुनते, पर आहिस्ता आहिस्ता मुनासिब वक्त पर उसको बख्शिश जरूर देवेंगे, और उसके साथ ताकत हाजमे की भी बख्शेंगे, एकाएक दया होने में आदमी मस्त और बेहोश होकर और दुनिया के कारोबार और कुटुम्ब परिवार को बिल्कुल छोड़कर मज्जूब (मस्त) फकीरों के मुवाफिक सर–गरदां (बेठिकाने) फिरता फिरेगा और अपनी आइन्दा की तरक्की को आप बन्द कर देगा क्योंकि ऐसी हालत में फिर दुरुस्ती से अभ्यास नहीं बन पड़ेगा और इस वास्ते तरक्की बन्द हो जावेगी।

९–बहुत से सतसंगियों को खबर भी नहीं है कि पहिला मुकाम किस कदर दरजा बुलन्द रखता है यानी कुल्ल बड़े मतों का यह पद सिद्धान्त है और जहां से तीन लोक की रचना की कार्रवाई हो रही है और जहां पहुँच कर योगी लय हो गये और इधर का होश उनको नहीं रहा। अब बड़ी भारी दया सतगुरु दयाल की है कि ऐसे रास्ते और ऐसी युक्ति से अपने सच्चे परमार्थी जीवों को चलाते और चढ़ाते हैं कि जिस में उनके दुनिया के किसी कारोबार में हर्ज भी न होवे और परमार्थ में आला दरजा सहज में बे–मालूम

Scanned with CamScanner

हासिल होता जावे। इसका ज्यादा और मुफस्सिल हाल लिखने में नहीं आ सकता, अलबत्ता कुछ थोड़ा सा जबानी कहा जा सकता है।

१०–सच्चे और प्रेमी अभ्यासी को चाहिये कि वह सतसंग में बैठ कर अच्छी तरह से निर्णय और तहकीक के बचन इन पांच बातों के गौर से सुनकर और समझ कर, अपने मन के भरम और सन्देह और शंकों को जिस कदर जल्दी हो सके, दूर करे, नहीं तो वह अभ्यास में विघ्न डालेंगे और इसके मन और सुरत को सफाई और शौक के साथ भजन और ध्यान में लगने नहीं देंगे, और वह पांच बातें यह हैं।

पहली–निर्णय इस बात का कि सतगुरु दयाल कुल्ल मालिक और सर्व समरत्थ और सच्चे माता पिता कुल्ल रचना के हैं।

दूसरी–यह कि सुरत शब्द मार्ग सच्चा और पूरा और सहज में धुर पद तक पहुँचाने वाला रास्ता और तरीका अभ्यास का है। इस से बढ़ कर कोई जुगत या रास्ता रचना भर में नहीं है और न हो सकता है क्योंकि और जितने रास्ते हैं, वह सब उन धारों के वसीले के हैं जो माया की हद्द में खतम हो जाती है और इस सबब से दयाल देश तक नहीं पहुँच सकते और यह मार्ग जान यानी रूह या सुरत की धार पर सवार हो कर चलने का है और जो कि जान या रूह या सुरत कुल्ल रचना में सब से बढ़कर जौहर है और सब रचना उसी के आसरे ठहरी हुई है और उसी से हो रही है, इस वास्ते इस धार से बढ़ कर और कोई धार नहीं है।

तीसरी–यह कि मन और इन्द्रियों का खमीर माया के मसाले का है और इस वास्ते उनका असली झुकाव बाहर और नीचे को तरफ संसार के भोग और पदार्थों में है।

जरूरत के मुवाफिक उनकी कार्रवाई दुरुस्त समझी जाती है, मगर फिजूल तरंगें और जरूरत से ज्यादा चाहें उठाने में हर्ज और नुकसान है। इस वास्ते अभ्यासी को थोड़ी बहुत रोक और सम्हाल अपने मन और इन्द्रियों की खास कर वक्त अभ्यास के बहुत जरूर है, नहीं तो भजन और ध्यान का रस जैसा चाहिये नहीं आवेगा।

चौथी–यह कि दुनिया और दुनिया-परस्तों और धन वालों की मुहब्बत और संग से सच्चे मालिक सतगुरु दयाल के चरनों के प्रेम में और भी अभ्यास में किसी कदर खलल और विघ्न पड़ता है। यह बात हर एक अभ्यासी ऐसे लोगों का थोड़ा संग करके अपने अंतर में परख सकता है। इस वास्ते मुनासिब और जरूरी है कि ऐसे जीवों का संग और मुहब्बत उसी कदर रक्खी जावे कि जिस कदर जरूरी और वाजिब होवे और ज्यादा उन में अपने दिल को बांधना या अपना वक्त बे-फायदा उनके संग में या दुनिया की गप शप में खर्च करना, अभ्यासी को मुनासिब नहीं है।

विद्यावान लोग भी जिनको सच्चा शौक किताबों के पढ़ने का है, अपने वक्त को बहुत सम्हाल कर खर्च करते हैं यानी सिवाय रोजगार और देह और गृहस्थ के जरूरी कामों के, बाकी वक्त अपना नई नई किताबों और अखबारों की सैर में खर्च करते हैं, फिर परमार्थी अभ्यासी को किस कदर ख्याल अपने वक्त का कि फिजूल और बे-फायदा खर्च न होवे, रखना चाहिये?

पाचवीं–सतगुरु दयाल के चरनों की सच्ची सरन और उनकी मेहर और दया का आसरा और भरोसा।

११–जब इन पांच बातों की सम्हाल थोड़ी बहुत दुरुस्ती से बराबर जारी रहेगी तो यकीन है कि ऐसे अभ्यासी को मन और माया और दुनिया के विघ्न बहुत कम सतावेंगे और उसका अभ्यास दिन दिन दुरुस्ती से बनेगा और थोड़ा थोड़ा रस और आनन्द के साथ, बढ़ता जावेगा।

Scanned with CamScanner

और मालूम होवे कि अभ्यास में यह सब काम शामिल हैं:—१ सुमिरन करना, २ सुमिरन और ध्यान करना, ३ भजन करना, ४ पोथी का थोड़ा बहुत समझ समझ कर पाठ करना या सतसंग में बैठ कर सुनना, ५ सन्त मत की चरचा करना या सुनना, ६ सन्त मत और उसके अभ्यास के ताल्लुक की बातों का मन में विचार और निर्णय और ख्याल करना, ७ अपने मन और इन्द्रियों की चाल की हर रोज निरख परख करते रहना और जिस कदर मुमकिन होवे उसकी सम्हाल रखना।

१२-अभ्यासी को बे-फायदा जल्दी इस काम में नहीं करना चाहिये और गौर करना चाहिये कि दुनिया के काम भी जैसे विद्या सीखना, जल्दी के साथ दुरुस्त नहीं बनते। इस में पन्द्रह और अठारह बरस सहज में गुजर जाते हैं, जब कि विद्यार्थी कुल्ल वक्त अपना इसी काम में लगाता है, बल्कि घरबार और कुटुम्ब परवार से भी जुदा हो कर मरदसे में रहना कबूल करता है। फिर यह भारी परमार्थ का काम जब कि सिर्फ दो तीन या चार घंटे उस में दिक्कत से लगाये जाते हैं और बाकी वक्त दुनिया के काम और दुनियादारो के संग में गुजरता है, किस तरह ऐसा जल्दी बन सकता है ? बड़ी दया सतगुरु दयाल की समझना चाहिये कि वे ऐसी थोड़ी मेहनत पर भी अपनी दया करते हैं और सच्चे अभ्यासी को थोड़ा बहुत अंतर में सहारा थोड़े दिनों में बख्शते हैं।

रैदास की बानी

प्रभुजी संगति सरन तिहारी। जग जीवन राम मुरारी॥ टेक॥
गली गली को जल बहि आयो, सुरसरि जाय समायो।
संगत के परताप महातम, नाम गंगोदक पायो॥ १॥
स्वांति बूंद बरसै फनि ऊपर, सीस विषै होइ जाई॥
ओही बूंद कै मोती निपजै, संगति की अधिकाई॥ २॥
तुम चंदन हम रेंड़ बापुरे, निकट तुम्हारे आसा।
संगत के परताप महातम, आवै बास सुबासा॥ ३॥
जाति भी ओछी करम भी ओछा, ओछा कसब हमारा।
नीचे से प्रभु ऊंच कियो है, कह रैदास चमारा॥ ४॥

Scanned with CamScanner

दुनियां का मायावी बाजार

(वार्षिक भण्डारा, योगस्थली मथुरा दिनांक ८-१२-७८ रात्रि ७-३० बजे)

प्रेमियों, बच्चे बच्चियों यह संसार बहुत ही बड़े धोखे का, भूलभुलैया स्थान है। जितनी चीजें चाहो मांग लो। लेकिन सब चीजें पाने के बाद यहीं आप को छोड़ना है। इसी को कहते हैं माया का भूलभुलैया खेल। धन, सम्पत्ति, मकान, जमीन, रिश्तेदार कुटुम्ब,, बिद्या, भाषा अनेक चीजें यहां सब प्रकार से समृद्ध रुप से आप प्राप्त कर लो। फिर भी समय से आप को छोड़ देना है। इसी मायावी बाजमें, ममता में फंस गये तो जानों दुःख। ममता में भ्रष्ट रह कर संसार की जागृत बस्तुओं का इन्द्रियों द्वारा क्षणिक शुद्धभोगों को भोगोगे तो संसार की कोई बस्तु आप को लिपायमान नहीं रह सकती। इसलिए योगी पुरुषों, महापुरुषों, सिद्धों और ज्ञानियों ने यह बताया कि संसार की किसी बस्तु में लिपायमान मत होओ। निर्लेप रहो।

वस्तु काम के लिए थी

वस्तु होते हु!अपनी नहीं है। दूसरे की है। दूसरे की वस्तु से काम ले लो। जब वह मांगे तो दे दो। इसी को कहते हैं भौतिक बुद्धि ज्ञान उसने आप को काम के लिए कोई वस्तु दी। और जब मांगने आए तो रोने लगे। गालो देने लगे। चीखने चिल्लाने, लगे। तो फिर मानव बुद्धिज्ञान नहीं। आदान प्रदान में बस्तु से काम लो दो। कुटुम्ब बनाओ; परिवार बनाओ, शरीर रक्षा के सभी सामानों को जुटा लो। शरीर की सुरक्षा करो। लेकिन जब वह बस्तु मांगे कि हमारी हमको दे दो तो खुशी से दे दो।

कुछ लेकर नहीं आए थे

जब तुम आए थे कुछ लेकर नहीं आ; थे। नंगे आए थे फिर भी उसने सब कुछ अज्ञान अवस्था में परिवरिश के लिए साधन रखा। दूध पिलाया। माँ को छोड़ा, पिता को छोड़ा, भाई छोड़ा, बंधुओं को छोड़ा। समय समय पर सब चीजें उसने दी। शरीर की परिवरिश करा। और आप को पाल पोस कर बड़ा कर दिया। अब जरा सा आप को ज्ञान दे दिया तो कहने लगे मेरा। उसी अवस्था की चीज को समझो। यह चीजें मेरी नहीं थीं और न मैं किसी का था। अब मुझे जो बोध करा दिया है मेरी नहीं है। यह दूसरे की चीज है उससे काम लेता हूं। उसकी अमानत को हिफाजत से रखता हूं। और दूसरे के काम आता हूँ और दूसरे को काम में लेता हूँ। इसी को कहते हैं बुद्धि ज्ञान।

यह संसार रोने का स्थान है, यहां सुख नहीं

और जब से आपने इस बुद्धिज्ञान को छोड़ दिया कितनी वस्तुयें आपको मिल जांय लेकिन यह संसार रोने का है। बड़े बड़े राजाओं को

हमने रोते देखा। बड़े बड़े धनी मानियों को रोते देखा। बड़े बड़े पहलवानों को रोते देखा। परिवार वालों को रोते देखा। जिनके पास कम या ज्यादा सामान हो उसको रोते देखा। मुझे तो कोई हंसता हुआ इस जगत में दिखाई नहीं दिया। यदि हँसते हुये दिखाई दिये तो सन्त, महापुरुष महात्मा।

महात्माओं ने सब बोध करा दिया

बाकी चीजें ये आपकी नहीं हैं। महात्माओं ने हर प्रकार से बचपन से लेकर के अन्त तक आपको बोध करा दिया। जब जाने का समय आया तो दुनियां के तमाम लोगों को खड़े होकर दिखा दिया कि देखो कुछ लेकर नहीं जा रहा है। लेकिन फल तक कहता था मेरा है। मैं इसको किसी का नहीं दूंगा।

दो चीजें हैं। एक तो शादी के वक्त में जितनी ताकत होती है मनुष्य उतना खर्च करता है। और अन्त में कब करता है? आपको मालूम है? मौत के वक्त में। किसी तरह से बच जायं, चाहे लाखों लग जाय। लेकिन बच जांय। और शादी में हमारी प्रतीष्ठा रह जाय। जन्म में इतना खर्च नहीं होता है। मरने और शादी में बहुत खर्चा होता है। आदमी ऐसे ऐसे खर्चे को अपने सिर पर लेता है। और क्या मुसीबतें उसके सामने आती हैं यह तो वही जानता है। इसे कहते हैं काल का मायावी बाजार।

कर्म के बन्धन में बांध दिया है

यहाँ की सभी वस्तुओं को भुला दिया गया है। कर्मों के बन्धनों में आजादी देकर बांध लिया है। चाहे पाप करो या पुन्य करो। और उसी कर्मों के करने से ही सब कुछ न्याय और अन्याय आपके साथ होता है। जन्म-मरण चौरासी में आना जाना। उन्हीं कर्मों के अनुसार इन सारे जीवों के साथ अदृष्य खेल कर्मों का चलता रहता है। हमको यह मालुम नहीं। कौन लिखता है। कौन भेजता है? कौन ले आता है। कौन न्याय कर्ता है। कहां ले जाता है? कैसे क्या करता है? लेकिन दुनियां का दस्तूर नित्य प्रति दिन जमुना और गंगा के किनारे, किसी दरिया या तालाव के किनारे देखते हैं फिर भी कोई इस पर विचार नहीं करता।

उतना ही मांगो जितना जरूरी है

इसलिए वही उतनी ही चीजें मांगो जिससे आपका पूरा काम चल जाय। साधू कितना माँगता है? कि हे मालिक मुझे इतना दो कि मैं भी भूखा न रहूं, मेरे बच्चे भूखे न रहें। और कोई अतिथि आ जाय तो वह भी भूखा न रहे। क्योंकि अतिथि आयेगा और भूखा चला जायेगा तो मेरा घर तो समसान हो जायेगा। फिर गृहस्थ आश्रम किस काम का?

कोई भूखा न जाय यही दात दें

तो मालिक से हम यही दात मांगते हैं कि आप गृहस्थ आश्रम में इतना तो करना कि कोई महात्मा वापिस लौट के न जाये। ऐसी दात मांगते हैं कि न उसका है न आपका है। मांगते रहो और बाकी मालिक की याद करते रहो। चलते चलाते यह भी तमासा पूरा हो जायेगा। और वह भी तमासा हो जायेगा। वह भी देख लोगे और वह भी। यह छोड़ दोगे और उस तमासे में पहुँच जाओगे।

परमात्मा की तलाश हो रही है

वही असल में, उसी की तलाश इस तमाशे में हो रही है। खोज हो रही है कि हमारा घर हमारी चीजें, हमारा खेल कूद, हमारे साथी, इष्ट मित्र हमारे दोस्त हमारी हँस मण्डलियां सब हमें मिल जांय जो आनन्द लेती थीं। अगर

Scanned with CamScanner

वे यहां नहीं मिलती हैं। इसलिए दोस्त मित्र बनाये सबको और यह वह सब बीच में धोखा देता है।

मायावी बाजार में इतना ही मांगो ज्यादा नहीं

इसलिए बड़ी सावधानी और होशियारी से सब के सब। इस मायावी बाजार में इतनी वस्तुओं को मांगी जितनी जरूरत और आवश्कता है। ज्यादा मत मांगो। किसी के पास है ठीक है। किसी के पास नही है तो उतना ही मांगो। प्रार्थना करो भजन भक्ति की कि मेरा तो भजन बने। मुझे तो वह सम्मत्ति मिले। मेरी जीवात्मा जगे अपने घर में पहुंचे। ऐसी सामयिक साधन सामग्री दया करके दे दी जाय हम उस सम्पति को ले लें। जिसके पाने पर कुछ नहीं बाकी मांगने को रहता।

तो आप उतना ही मांगिए बाकी जगत की वस्तुएं। ठीक है। जरुरत के लिए मांगना गुनाह नहीं। प्रार्थना करना गुनाह नहीं। बेजरुरत बेकार की बात है। बिवेकी, जिज्ञासू, मालिक की याद करने वालों के लिए माफ है। मांगो। मालिक बिना आप की मांग के मांग को पूरा कर दे। तो यही बात होती है। तो हमेंशा मालिक को मांगो। उसको याद करो और उसके दर्शन दीदार की तड़प हो। लगन हो। रोना पीटना हो कि दर्शन हो। उसी के दर्शन से रोने पीटने में काम बन जाते हैं अपने आप।

अभी आपने साधना के पथ पर कदम रक्खा

हां साधना के पथ पर आप ने कदम रक्खा है। कदम को बढ़ाते चलो। और देखो ऊपर की तरफ में वह क्या देने के लिए अपना हाथ बढ़ाये हुए हैं। आप को देना चाहते हैं। उसे आप को लेना चाहिए।

यह महात्मा ने अनुभव लिखे हैं ये कहानियां नहीं हैं

तो सभी सतसंगी प्रेमी जन, उन लोगो ने अपने अपने समय में साधना की। उनके बड़े बड़े इतिहास लम्बे चौड़े और कहानियां बन गइं। वह कहानियाँ उनकी कोई असत्य नहीं। हम लोग यह समझे कि वह कल्पना मात्र है। तुलसी दास, कबीर मीरा आदिक ने या और भी लोग जो आए उन्होंने कोई कहानियां बना दी हों तो ये कहाँनियां नहीं हैं। यह तो अटूट इस जगत में उनके परिश्रम हैं। यह उनकी कहानियां हैं जिस तरह से उन्होंने इस मनुष्य रूपी मकान में अपने आगे को, अपने पीछे को अपने रोशन दान को कैसे साफ किया। और कैसे उसका दर्शन किया किन आंखो से किया। यह उनकी कहानियां हैं। हम लोग नहीं समझ पाते हैं कि यह किस तरह का क्या खेल है। यह रहस्य प्रभु का है। महात्माओं के द्वारा ही प्रगट होता है। भारत में संतो के द्वारा ही प्रकट होता आया है और भविष्य में भी होता रहेगा।

मालिक से मालिक को मागें

साधक हमेशा इस बात पर ध्यान रक्खें कि मालिक से, मालिक को ही मांगे। उसी को चाहें और उसको चाहने में अपने आप काम बनते चले जायेंगे। यह मैं आप को प्रथम में बताना चाहता हूं कि काशी का कार्यक्रम १५ फरवरी से २५ फरवरी तक यह अगले फागुन के महींने में होने जा रहा है। उस समय बहुत निर्मल, ऊचा से ऊचा सतसंग आप को सुनने को मिलेगा।

साधना जरूर करनी होगी

साथ ही साथ साधना का भी कार्यक्रम है। ४ घंटे तक प्रत्येक सतसंगी को वहां साधना करनी पड़ेगी। जो एक महींना कल्पवास करेंगे उनको कम से कम ८ घंटे प्रतिदिन साधना करनी पड़ेगी।

Scanned with CamScanner

अपनी साधना का पूरा समय करेंगे। उसी में सोयेंगे। उसी में खाना खायेंगे। उसी में और काम करेंगे। और उसी में साधना करेंगे। कितने घन्टे साधना के होंगे यह तो आप को वही अपने से तैं कर लेना होगा। अपनी सुबिधा के अनुसार हमारी तरफ से कोई बन्धन नहीं।

साधना का समय नहीं होगा

इसी तरह से ४ घन्टे की साधना का २४ घन्टे में। हमारी तरफ से कोई बन्धन नहीं हमें तो उतना समय चाहिए। कोई काम नहीं वहां पर होगा २० घन्टे में सो लो। बच्चों की सेवा कर लो, खाना बना लो, खााना खा लो। स्नान कर लो। ४ घन्टे समय हमको देना है। यह काम आप को पूरा करना है। कर लोगे वाह वााह। बहुत अच्छा हो जायेगा। आप के लिए भी फायदा। मेरे लिये भी फायदा है।

मैं भी जिस काम में लगा हूं वह भी कुछ

परिश्रम सफल होगा

बन जाय। तो मेरा भी कुछ परिश्रम आप के लिये कुछ सफल हो जाय। आप का भी परिश्रम अपने लिए सफल हो जाय। तो दोनों की इसमें वाह वाह भाग्यता है। और दोनों का भला है। महात्मा यही काम करते हैं। अपना वह कोई समय नष्ट नहीं करते। कोई घबराने की जरूरत नहीं। दर्शन किया, दर्शन दिया और फौरन वापस चले गये। जिस किसी को भी हो दर्शन दिया दर्शन लिया और अपने वापस चले गये। इस तरह से प्रत्येक सतसंगी नर नारी जो वहाँ उपस्थित रहेगा वह ऐसा करेगा। यह साधना करनी होगी।

एक जन्म गुरु भक्ति कर जन्म दूसरे नाम

अब यह धर्म की स्थापना का, आत्म जागरण का अभी तक तो हमने पहला जनम किया था। मैंने इसमें धक्कों खाये। इसमें रोये। लेकिन कुछ नहीं मिला तो दूसरे जनम में तो कर ही लेना चाहिये। और दूसरा जन्म क्या है? यह मालिक का भेद इस मनुष्य रूपी मकान में मिल जाय। उसका दरवाजा खुल जाय तो क्या हो जाय।

तड़प होनी चाहिये

अपने दरवाजे पर बैठकर उस मालिक को वास्तव में आदमी २४ घण्टे में ४ घण्टे में, ४ दिन में, महीने में साल में। अपने ही घाट पर बैठकर उसका दर्शन किया और लोग उसका दर्शन करते आये। तो तड़प बहुत बड़ी चीज है। तड़प के सामने कोई ऐसी चीज नहीं। आकाश फट जाता है।

तड़प से बड़ा काम होता है

आत्मा में वह शक्ति है कि जब वेदना और तड़प आती है तो आसमान हिलता है। जमीन हिलने लगती है। इसलिए वह आत्म वेदना है। अन्धकार की, शारीरिक अज्ञान की वेदना नहीं। वह प्रकाश की ज्ञान की बेदना है। जब जीवात्मा में पपीहा की तरह से प्यास लगती है।

पपीहा क्या करता है

जब पपीहा उस स्वाति के बूंद के लिए एक स्वांस हो करके तड़पता है तो वह मालिक उसकी प्यास को बुझाने के लिए स्वाति की बूद को उसके मुंह में डाल देता है। लेकिन फिर क्या करना है? कि मुंह को खोल देना है। इतना ही काम पपीहा को करना है। चन्द्रमा निकला है शाम को। चकोर बैठ गई और जब जब चन्द्रमा बढ़ता है, मुंह खोल दिया उसने। वैसे ही मुंह खोल कर चलती जाती है ऊपर की ओर इस तरह से। और ऊपर ठीक ऊपर आती है तो ठीक उलट जाती है मुंह को खोले रहती है। तब उसके मुंह में स्वाति की बूदे चली जाती है। और कोई पानी नहीं पीती है। न कोई आगी का अंगारा खाती है।

Scanned with CamScanner

जीवात्मा की प्यास

इस तरह से जब प्यास इन जीवात्माओं को मनुष्य रूपी मकान में खास कर जब लगती है तब मालिक सब इच्छा पूरी कर देता है। इसी तड़प और प्यास के लिए महापुरुषों ने बड़े बड़े अथक परिश्रम, जगंलों में बुलाकर शहरों में आकर अपने अपने धार्मिक उपदेश सुनाकर। हर तरह से दया दृष्टि कृपाकर उन्होंने दिया जो इतिहास बन गया। मालिक के दर्शन उन्होंने दिया दीदार किया। और उसमें लग गये। उसको प्राप्त किया।

धर्म की स्थापना का काम है

अब काशी के कार्यक्रम में ऐसा अपना कार्यक्रम समझें कि चाहे मन हो, चाहे बुद्धि हो, चाहे कान हो, चाहे आंख हो, चाहे हाथ पैर हो, और शरीर सम्बन्धी जितने भी सामान हैं। जितने यथाशक्ति अपने पास में हों। धर्म की स्थापना, कर्म की स्थापना जगत को संदेश देने का जगत को सीधे रास्ते पर ले आने का, मानव को सीधा रास्ता समझाने, बुझाने का इसमें सबमें सब लोग हर प्रकार का यथाशक्ति योगदान पूरा करें। अगर आप इस परीक्षा में, इस काम में, इस मेहनत में सेवा में सफल हो गये तो सारा भारत और भारत के बाहर लोग जाग जायेंगे।

परमात्मा एक जगह पर रहता है

और एक केन्द्र एक स्थान बना कर। सूरज अपनी जगह पर रहता है वह किसी के दरवाजे दरवाजे नहीं घूमता। अपनी जगह पर रहता है और जब निकला सबको रोशनी दे देता है। इसी तरह से मालिक अपनी जगह पर रहता है। महात्मा अपने स्थान पर बैठे रहते हैं, । शरीर तो घूमता रहता है लेकिन जहां उनकी जीवात्मा बैठी हुई है वह एक ही स्थान पर है। उधर रा इधर-उधर हटती चलती नहीं। क्योंकि किसी की मृत्यु आज हो रही। कोई बम्बई में जा रहा, कोई कलकते में जा रहा। कोई गिर रहा, कोई मर रहा तो महात्मा यहां बैठे हैं शरीर से और वह मर गया तब तो वह गड्ढे में चला गया। फिर उसके पकड़ने का लाभ ही क्या हुआ कुछ नही ?

वह बड़ी ऊंची मन्जिल पर रहता है

वह तो इतनी ऊंची मंजिल पर बैठे हैं कि जहां सब जीव सिमट करके जाते हैं। जहां जीव सब हाजिर मौत के वक्त में निकाल करके कर दिये जाते हैं। उनके ऊंचे स्थान पर बैठकर और पूरा वहां नियंत्रण करते रहते हैं। पूरी जीवों की सम्भाल रखते हैं।

वह सोते नहीं हैं

इसलिए जीव गड्ढे में नहीं जाता। ऐसे उस स्थान को कभी नहीं छोड़ते। चौबीसो घण्टे सोते, उठते, जागते उसी स्थान पर बैठे रहते हैं । नहीं तो महात्मा सो जांय। जो गिर गया वह तो मर गया तब तो चला गया गड्ढे में। फिर तो नर्को और चौरासी में गिरा वह सब बेकार हो गया। फिर परमार्थ का क्या मतलब ? कुछ भी नहीं।

इसलिए चाहे सोते रहो, चाहे जागते रहो, चाहे चलते रहो, चाहे जंगल में रहो, चाहे पहाड़ों पर रहो, चाहे बस्ती में रहो। कोई कहीं। वह ऐसी मंजिल पर बैठे हुए हैं ऊंचे वह अपने स्थान को कभी नहीं छोड़ते। लेकिन यह रहस्य जभी समझ में आपके आएगा जब बाहर के प्रमाण लोगों को हर प्रकार के तैयार हो जांय।

सब अपनी जगह पर काम करते हैं

यह तारे अपनी जगह वर काम करते हैं सूरज, चन्द्रमा अपनी जगह पर काम करता है।

यह सब अपनी जगह पर। रोज आप इसको देखते हैं। अपनी जगह से निकलते हैं अपनी जगह पर अस्त हो जाते हैं।

मेहनत करनी है

इसी हरह से महापुरुषों का जो अज्ञान खेल हो रहा वह आपकी समझ में नहीं आता है। उनका तो यह वास्तविक खेल होता है। प्रकाश में ही होता है।

तो सेवा के लिए बिल्कुल तैयार रहें। बाबा जी छोटी से छोटी मेंहनत लिखा है छोटी से छोटी मेहनत करते हैं? और बड़ी से बड़ी। हम मेहनत से पीछे कभी नहीं हटते। चाहे शारीरीक मेहनत हो या किसी प्रकार की हो। और उसको आप सभी लोगों ने इतने दिनों तक अनुभव किया। तो महापुरुषों की मेहनत जगत जीवों के लिए होती है।

सबको ज्ञान आ जायेगा

इस समय हर किस्म के लोग यहां उपस्थित है। छोटे हैं बड़े हैं अच्छे कपड़े पहिने हैं मैले भी पहिने हैं। लेकिन दो दिन, चार दिन, दस दिन एक महिने दो महीने जब बैठते जाएंगे तो जो मैले कपड़े पहिने हैं वह भी बहुत ज्ञानी है। आपको मालुम हो गया स्त्रियां भी बड़ा ज्ञान का विवेचन करती है। ऐसी ऐसी देवियों को देहातो में जब देखिए आप। दो चार ये सतसंग सुन लिए जब अयोध्या, अहमदाबाद या मथुरा हो कर वापस लौट रही, तो उनके ज्ञान को सुनिए तो ऊचा, लोग कहते हैं। भई इतना ऊचा उपदेश तुम तो पढ़ी लिखी नहीं थी, तुम्हे तो कुछ कहना नहीं आता था लेकिन इतना बड़ा उपदेश तुमको कहां से मिल गया ज्ञान कहां से आ गया ?

यह तो ज्ञान का भन्डार है

इस लिए यह तो भन्डार है ज्ञान का। मानव मात्र के लिए है। किसी विशेष व्यक्ति के लिए नही है मानव के लिए है। किसी विशेष व्यक्ति के लिए नहीं है भगवान का ज्ञान विशेष व्यक्ति के लिए नहीं सबके लिए उसने पहले से ही रक्खा है। जो उसको चाहे अपना सकता है।

सबको समान रूप से

अपनी अपनी सुविधा जो आपने लोक में स्थापित कर रक्खी है, उस तरह से आप अपने बना लोगे। लेकिन भगवान की तरफ से यह एक सामान्य स्थान है। जहां सबकी इज्जत है सबकी मान्यता। छोटा हो बड़ा हो किसी तरह का भी हो। आप देखते हो सबको बराबर। हमारे यहां इस तरह कोई झगड़ा झंझट किसा का नहीं मिलता है कि बाबा जी किसी को ज्यादा चाहते हैं किसी को नहीं चाहते हैं। न हमारी दृष्टि में कभी आया न भविष्य में भी आने वाली कोई ऐसी चीज नहीं है। और क्या आयेगा, जब आप पहले नहीं आया तो क्या आ सकता है। हम तो सबको चाहते हैं। सबसे प्रेम है सबको एक ही मार्ग दिखाते हैं। सबको एक ही बात बताते हैं एक ही रास्ता सबको भजन ध्यान का।

आत्मा का भी काम करना चाहिये

अब रह गया यह है कि आप कितना समय मेहनत में देते हैं। यह आप के ऊपर निर्भर है। लेकिन जो जितनी मेहनत करता है उतने में ही उसका काम बनेगा। कभी करना थोड़ी सी मेंहनत ज्यादा चाहिए। महातमा ज्यादा से ज्यादा यह सिखाना चाहते हैं कि आप अपने गृहस्थ आश्रम में रह कर २२ घंटे तो आप घर गृहस्थी में लगाएं। लेकिन दो घंटे आतमा के लिए, जीवातमा के लिए, सुरत के लिए। इस रूह के लिए भी लगा देना चाहिए। इतनी मेहनत जो

है करना चाहिए। और यह मेहनत कम है। लोगों ने गृहस्थ आश्रम में दस दस घंटे आठ आठ घंटे समय लगाया। घर का भी काम करते रहे भजन का भी काम करते रहे। लेकिन इसी में आप का काम बन जायेगा कोई ज्यादा मेहनत नहीं मांगता हूं। और उसमें भी निमित्त मात्र। सहयोग उसमें मिल जाएगा। मालिक की दया मिल जाएगी। कम मेहनत करो तो ज्यादा लाभ आप को हो जाएगा। परमार्थ में भी आप को इधर भी आप को।

काम क्रोध के वेग को रोकें।

इस लिए आप सब लोग हर तरफ से सुबिधा उस मालिक की तरफ, महात्माओं की तरफ से हर तरह की सुबिधा समझते रहें। उनकी तरफ से कोई असुविधा नहीं होने पाती है। सब लोग सुबिधा के निशान पर घाट पर आजांय। मन इन्द्रियों को थोड़ा सा रोक। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जो इस जगह पर पीड़ित करते हैं दुखी करते है। बिग्रह पैदा कर देते हैं, भ्रान्ति लोगों में फैला देते हैं। एक दूसरे में तनाव पैदा कर देते हैं। इन पांचो भूसों से, बचने की जरूरत रहती है। और वह कैसे बचते हैं। जब महात्माओं के शब्द याद आ जाते हैं, तब कभी काम कम, कभी लोभ कम, कभी मोह कम कभी अहंकार कम। अरे भाई छोटे बन जाओ सब आप को प्यार करेंगे। बड़े बनोगे तब।

छोटा बन जाओ

अरे भाई नन्हें बच्चे को सब प्यार करते हैं। चाहे किसी का भी बच्चा हो। सूअर का ही बच्चा हो। सब घृणा करते हैं लेकिम अगर छोटा बच्चा आ जाय तो उसे प्यार करते हैं। कुत्ते के बच्चे को। बिल्ली के बच्चे को। किसी भी पशु पक्षी के बच्चे को। कोई किसी जात का छोटा नन्हा बच्चा हो, सब प्यार करते हैं क्यों? वह निर्मल होता है। उसमें कोई बनावट नहीं होती है।

तो अपने लोगों को नन्हा बच्चा बनना है। जब बच्चा बन जाय तब महात्मा और भगवान कितना प्यार करते हैं। वह तो आप को अपने प्यार में डुबा लेते हैं।

मां अपने प्यार में डुबा लेती है

माँ और क्या करती हैं। जब तमाचा मार देती है बच्चा रोने लगता है तब वह अपने प्यार में उसको डुबा लेती है। तत्काल भूल जाता है। मार तो जरूर लगी दर्द हुआ लेकिन ऐसा उसने प्यार किया कि तुरन्त बच्चा उसके प्यार में डूब गया। और उस दर्द को भूल गया। ऐसे ही आत्मा और भगवान कि वो जो सासांरिक तमाचा जो पड़ता है अपने प्यार में आपको डुबा लेते हैं। भूल जाते हैं आप। और जो दर्द आपका है आराम हो जाता है तो ऐसा है। घाट पर बैठकर थोड़ा सचेत होकर काम क्रोध लोभ मोह अहंकार से। और उसके प्यार को लें अमृत चूता है। उसको थोड़ा सा पीयें। उसमें बड़ी मिठास है।

घाट बदलना सीखो।

हम लोग उस घाट पर बैठकर पीते नहीं हैं। मन इन्द्रियों के घाट बैठकर इन्द्रियों का रस पीती हैं बस। फिर व्याधियां तकलीफें आपको होने लगती है। रोने लगते हो। कभी गए इन्द्रियों के घाट पर थोड़ा जगत का काम कर लिया। फौरन उधर से हटे अपने ध्यान के घाट पर बैठ गए, तो पीने लगे उधर। घाट को बदलो। बदलना सीख जाओ। इधर से हटे उधर उधर से हटे इधर लग गये। इसीलिए साधन भजन और ध्यान और सुमिरन कराया जाता है कि घाट बदल जाय। आदत पड़ जाय बदलने

Scanned with CamScanner

की। इधर से हटे उधर लग गए। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार हट गया। जब जरूरत आई तब थोड़ा सा यह काम किया फिर उसके बाद बदल दिया। तो बदलना सीखो जब सीख गए आना और हटना, आना और हटना। काम बन जाएगा फिर देर नहीं लगेगी।

सब विकारों को दूर करो

एक ही घाट पर पैंतर बदलते रहोगे पहलवानी करोगे तो फिर काम नहीं हो सकता है। महात्मा आपको खतरा सिखा देते हैं। और उसके दाव सिखा देते हैं। यह दाँव है शील, क्षमा, संतोष विरह, विवेक। और काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार। अब किसमें चला जाना है फौरन? अपने उसी घाट बदल दो काम आया शील में चले गये। क्रोध आया क्षमा में चले गए। मोह आया तो विवेक में चले गए। लोभ आया तो फिर आप समझ लिया। अरे जरा सा कम से कम यह तो समझ ही लेना चाहिये। अरे भाई जो मालक ने दिया है वही बहुत हमारे लिए है। वही बात हुई। अहंकार आया तो दीनता में आ जाओ, फौरन अरे भाई, हम तो सबसे छोटे हैं।

बुद्धि तब ठीक काम करेगी

तो इस तरह से अपने घाट को बदल देना काम बन जायेगा। इसी को कहते हैं बुद्धि ज्ञान। बुद्धि ज्ञान के घाट को बदल देना है। इन्द्रियों के घाट को छोड़देना है। जब बुद्धि ठीक ठीक काम विवेक का करने लगेगी, तो मन धक्का नहीं मारेगा और आप को गिराएगा नहीं। फिर बुद्धि की सब जकड़ में रहेंगे। और जब चाहेगी बुद्धि इधर उधर घुमाती रहेगी। फिर मन नहीं भाग सकता। बुद्धि को नष्ट नहीं कर सकता। इसलिए रास्ता बदल जायेगा। परमार्थ का रस मिलने लगेगा। जीवात्मा जाग जायेगी। यह थोड़ा सा सतसंग सुनायाा। अब थोड़ा सा दोहा सुनाना चाहता हूं।

अब ध्यान से सुनो। यह थोड़ा सा सतसंग सुनाता हूं।

गुरु मोहिं अपना रूप दिखाओ।

गुरू अपना निज रूप दिखा दीजिए

सुरत कहती है कि हे गुरु, आप अपना हमको रूप दिखा दिजिए कि आप का रूप क्या है। वह कोई हाड़ मांश का नहीं। यह तो इस तरह से एक पोल है। इस पर बैठ कर काम कर रहा है। क्योंकि सुरत तो इस पोल पर बंठ कर जकड़ी हुई है। बंधी हुई है। फंसी हुई है। और उसने अपने घाट को छोड़ दिया। उसका अस्तित्व खतम हो गया। अब उसे पता नहीं कि मैं क्या हूँ।

तो हे गुरु आप अपना वास्तविक रूप जो प्रकाश का है, जो नूरानी है, जो सुन्दर है। जो चमकता है, जो आनन्द का है। जो आकर्षक, खीचने वाला है। वह अपना दिब्य रूप, अनूठा रूप हमें दिखाइये कि वह कैसा रूप है। वह तो कोई ऐसा नहीं है कि बाहर सफेद दाढ़ी है, सफेद बाल है। सफेद कपड़े हैं कि काले कपड़े हैं। या काला रंग है या गोरा रंग है। या चितकबरा है ऐसा नहीं। वह बड़ा नूरानी है।

वह नूरानी दिव्य रूप है

बड़ा प्रकाश मान, सूरज से भी ज्यादा चमचम चम चम चमकता हुआ। उसकी चमक पर तो आँखे ठहरती नहीं हैं। कहते हैं वह रूप हमें दिखा दीजिए अपना वह रूप।

आपने तो यह रूप हमको समझाने के लिए दिखाया। लेकिन वह रूप दिखा करके वहां ले जायेंगे। वह हमको दिखा दीजिए इतनी दया दृष्टि, इतनी कृपा कर दीजिए।

Scanned with CamScanner

मलेरिया में लोगों को दर्शन मिल रहा है

हमारे एक मदन लाल जी हैं। मलेशिया जाते हैं। अभी उन्होंने कहा कि वहां लोग कहते हैं कि एक दाढ़ी वाले बाबा सिर पर कपड़ा रक्खें हुए घूमा करते हैं। मलेशिया में। वे आगे पीछे आगे पीछे। आगे पीछे; आगे पीछे घूमते हैं। एक मकान में ले गये। एक फोटो दिखाया तो कहते हैं यही बाबा जी हैं। यही हैं बस पहचान लिया।

मालिक एक जगह से बैठकर काम करता है

अब देखिये कि मालिक की सत्ता का कितना जाल बिछा हुआ है। यह सारी सृष्टि। आकाश, पाताल, यह जितने लोक लोकान्तर हैं सब शब्दों का जाल। बिना शब्द के एक कण मात्र भी खाली नहीं। और उस पर क्या? जब चेतन्यता में जाती है तो जाल की तरह से कण कण में समाई हुई है। कहीं भी अपने वास्तविकता का इजहार दिखाने लगी। यह तो अनुभव की चीज है। अन्तर जगत में यह देखने को मिलतें हैं।

ऋषि मुनि महात्मा भारत में पहले त्रेता, सतयुग, द्वापर, में आते रहे। वे क्या काम करते रहे। साधू सन्तों ने क्या काम किया।

वह आपका दिव्य रूप कैसा है

तो कहते हैं कि हे गुरू मुझे अपना वह रूप, जिस मुकाम को जिस स्थान को, जिस लोक को जिस धाम को आप ने छोड़ा है वह आप का कौन सा रूप हैं। यह शरीर तो पंच भौतिक है। यह तो यहां का है। जल, पृथ्वी, अग्नि, वायु, आकाश का बना हुआ। यह हाड़ मांस का, यह तो यहीं छूट जायेगा। लेकिन वह कौन सा रूप है। वह हमको कृपा कर दया कर दिखाइये।

यह तो रूप धरा तुम सर्गुण
जीव उबार कराओ।

कहते हैं कि यह तो जो रूप आप से धारण किया है वह तो जीवों को जगाने के लिए धारण किया है। यह जगत का स्थूल शरीर है। स्थूल रूप हैं। इसमें जीव फंसे हुये हैं। यह अंधकार में हैं।

लोग उसे अनिर्वचनीय कहे

तो यह तो आपका सगुण रूप है। वह निर्गुण रूप कौन सा है। वह दया करके, वह रूप दिखाइये। यह तो हाड़ मांस का है। वह चमड़े का तो है नहीं। वह नूरानी रूप है। वह तो ऐसा रूप है जिसका किसी ने वर्णन नहीं कर पाया। सब लोग उसको अनिवर्चनीय अनिवर्चनीय कहकर चले गये। दर्शन सबने किया। अनुभव सबको हुआ। अपने रूप को, मालिक के रूप को सबने देखा। लेकिन सबने यही कहा वर्णन नहीं हो सकता। कहने में नहीं आ सकता। लम्बाई, चौड़ाई, ऊचाई उसकी वर्णन नहीं की जा सकती। वह कितना सुन्दर है यह लिखा नहीं जा सकती। वह सुन्दरों का भी सुन्दर है। यह रूप तो सर्गुण है। लेकिन वह निज रूप जो है। वह दया करके दिखा दीजिए।

रूप तुम्हारा अगम अपारा
सोई अब दरसाओ।

वह रूप अगम अपार है

कहते है वह रूप जो अगम और अपार है वह दर्शाइये। उसका दर्शन कराइये। दीदार कराइये। यह उन जीवात्माओं की जो घाट पर बैठ जाती हैं और रस लेने लगती हैं उनकी यह प्रार्थना है। उस रूप का दर्शन कराइये। यह तो सर्व रूप है। आज हैं कल नहीं रहेंगे। कल आप नहीं रहेगे। लेकिन वह कौन सा रूप है जो हमसे मिल जायेगा। हम उससे मिल जायंगे। न हम

उसको छोड़ेंगे। न वह हमको छोड़ेगा। वह रूप जो अगम और अपार है। उसका दर्शन कराइये। वह दिखाइये।

देखूं वह रूप मगन होय बैठूं।
अभय दान दिलवाओ।

पाने पर आत्मा निश्चिन्त हो जाती है

कहते हैं, हे गुरू ऐसा अभय दान दें कि निज स्वरूप का दर्शन हो जाय, निश्चिन्त हो हो करके बैठ जाय। कोई चिन्ता किसी प्रकार की न रहे, कि अब कुछ करने को बाकी रह गया। जब उस रूप का दर्शन होता है, तब यहां, स्थूल रूप। अन्दर में जब चलोगे तो लिंग रूप। सूक्ष्म मंडल जाएंगे तो सूक्ष्म लोक, तो सूक्ष्म रूप। कारण मंडल में जाएंगे तो कारण रूप और कारण से भी परे जाएंगे तो सुरत का अपना रूप। कहते हैं कि वह धन मिल जाय तो निश्चिन्त और अभय, तो हमको डर कोई प्रकार का नहीं है और अब काम पूरा बन गया, अब निश्चिन्तता हो गई।

दुनियां की चीज नहीं मांगता

तो ऐसा दान सुरत महापुरूषों से अर्ज और प्रर्थना करती है। और मांगती है। यह तो उसने नहीं कहा कि राजपाट दे दीजिए। धन दौलत दे दिजिए। अमीर गरीब बना दीजिए विद्या बुद्धि दे दिजिए, कोई और सामान कुछ नहीं। हमको वही दान दीजीए कि जिससे श्रद्धा आ जाय और निश्चिन्त हो जांय। अब कोई चिन्ता न रहे और कोई डर रहे। यही दो चीजें मांगती है। अब पूरा हो गया। अभय हो गये। और जिसको पकड़ना था पकड़ लिया। ऐसी प्रार्थना अटूट समवेदना और क्या मांगेगा? और क्या होना चाहिए मालिक पार कर देता है और वही साथ रहता है।

रास्ता खुलता है तो उधर जाता है।

तो इस मनुष्य रूपी मकान में कव होता है जब दिव्य नेत्र ज्ञान चक्षु। रास्ताखुल जाता है तब उधर जाता है। जब आत्मा का काम हो जाता है जब प्यार होता है बोध होता है उसको तब फिर क्या होता है उसको

यह भी रूप पियारा मो को।
इस ही से उसको समझाओ।

अरे, प्रेमी कहते हैं कि यह रूप तो मुझे प्यारा है ही क्योंकि अगर रूप नहीं रहेगा तब उसे कैसे बताया जाएगा। इसलिए इस रूप की महिमा तो मुख्य करके मृत्युलोक में है। यह रूप तो प्यारा है ही। लेकिन इसके साथ साथ उस रूप को भी देखना चाहती है मरने से पहिले क्योंकि जब यह नहीं रहेगा तो उसको आप गैसे बताएंगे। इससे प्यार हो जाएगा तब उससे भी प्यार हो हो जाएगा। बिना प्यार के उसे नहीं पकड़ सकते। ऐसे जगत की बस्तुएं आप को नहीं छोड़ती न आप जगत की बस्तुओं को छोड़ते हैं। जब उनके बाहर के रूप से प्यार होने लगता है। हर चीज मे ममता हटने लगती है खिसकने लगती है। तब कहते हैं कि क्या हो गया? यह क्या हो गया। इस तरह से इधर से घृणा होने लगी। उधर प्रेम होने लगा। यह दुनियां के बनावटी प्रेम थे उससे उपराम होने लगे। तब लोग यह समझते हैं कि दुनियां नाश हो जावेगी।

दुनियां नाश नहीं होती

यह नाश नहीं होती है। एक मरतबे समेटना है। फिर उसके बाद फैला दो। समेट लो, फैला दो। समेट लो फैला दो। कछुये जैसा बना लो बाहर निकल आये जब चाहे अन्दर समेट ले। जब जरूरत हो खाने की तो बाहर ला लो।

Scanned with CamScanner

ऐसा कर लिया।

ऐसा अपना काम करो। लेकिम एक मतंबे तो समेट लो। नहीं समेट लोगे तो वह निज रूप नहीं मिलेगा। और न जा सकोगे। तो इससे रूप से तो प्यार है ही लेकिन वह रूप दिखा दिजिए कि बिश्वास हो जाय और काम हो जाय।

बिन इस रूप काज नहीं होई।
क्यों कर वाहि लखाओ।

यह भौतिक शरीर नहीं होता तो वह कैसे मिलेगा

और प्रेमी कहते हैं कि मुझे यह बिश्वास है कि जब तक यह रूप नहीं होगा तब तक वह काम नहीं बन सकता। क्योंकि साधना तो इस ही रूप से कराई जा सकेगी। यह रूप नहीं होगा तो वह रूप कैसे देखने को मिलेगा। यदि उसे दिखाना होता तो वह तो दिखाई देता एक क्षण में। किन्तु अब निज रूप इस प्रकार से देखा नहीं जा सकता। जब तक इस रूप से प्रेम नहीं होगा तब यह जीवात्मा घाट पर आयेगी नहीं और तब तक काम नहीं बनेगा।

दुनियां तो विरोध करती है

तो सच्चा महात्मा वही है जो उस रूप को दिखा दे। मगर उस रूप को देखने के पहले इस रूप से प्यार होना चाहिए। लेकिन दुनियां तो ऐसी है कि कुछ सुनाने जाओ तो सुनती ही नहीं। रूप की बात तो छोड़ दीजिए जबान की बात कहता हूं। जब गांव में सुनाने जाता हूं तो लोग दाढ़ी देख करके भगते हैं। कहते हैं बाबा जी आ गये। बाबा जी भगा ले जांयेगें। चलो चलो। वहां जाने की कोई जरुरत नहीं है क्योंकि दाढ़ी वाले आ गये। वे बाबा बना देंगे। भगा ले जांयेगे।

तो आप को तो मतलब है कि बुरा लगता है।

अगर वह मालिक का भेद बताया जाय तो कैसे समझ में आयेगा। अगर वह मालिक का आनन्द मिल जाय तो लोग कहेंगे कि पागल हो गया।

ता ते महिमा भारी उसकी
पर वह भी लखवाओ।

इसकी महिमा बहुत बड़ी है

कहते हैं कि इसकी महिमा बहुत बड़ी है। लेकिन उसकी भी लखा दीजिए। इसकी तो महिमा है ही मगर उसे भी दिखा दीजिए। अपने जीवन काल में। क्योंकि सबने देखा। जितने लोग आए उन्होंने देखा। तो उसे दिखा दीजिए। तो प्रेमी की मांग है कि ऐसी दया कीजिए, कृपा किजिए।

दृष्टि का महत्व है

कृपा की दृष्टि, दया की दृष्टि मेहर की दृष्टि कर दीजिए। दृष्टि को सबने मांगा है। कान और सिर की कृपा नहीं मांगी है। दृष्टि, दया की दृष्टि कृपा की दृष्टि, मेहर की दृष्टि। करुणा की दृष्टि ज्ञान की दृष्टि। तो यह दान मागते हैं। वे समरथ हैं। इस मन के सामने और कोई रास्ता नहीं है। तो कहते हैं कि कृपा कर दीजिए।

वह तो रूप सदा तुम धारो।
या ते जीव जगाओ।

तो कहते हैं कि उस रूप में तो आप हमेशा सदा रहते हैं उसका तो कभी नाश होता नहीं। लेकिन यह रूप तो कभी कभी आता है।

तो असल में इस रूप से ही उस रूप को दिखाते हैं। बिना इस रूप के उस रूप का अनुभव नहीं होगा। उसका बोध नहीं होगा। वह देखा नहीं जा सकता। बताया नहीं जा सकता। उसका रास्ता भी नहीं है। न बताया जा सकता है।

मनुष्य योनि सबसे महत्वपूर्ण है

तो इसी से दिखाया जा सकता है।

मृत्यलोक में इसी सबका महत्व है। तो यह मृत्युलोक बहुत महत्व पूर्ण है। इसीलिए है कि यह सन्तों की भूमि है। इससे ऊपर जाने और नीचे आने का पूरा अधिकार है। यहां मनुष्त योनि सबसे महत्व पूर्ण है। देवता भी उसी के लिए तरसते हैं।

पुण्य क्षीणे मृत्यु लोके।

पूण्य क्षीणे मृत्युलोक में आना पड़ेगा। नीचे आ जायंगे तो उन्हें फिर मनुष्य शरीर मिलेगा। फिर गलती करेंगे तो फिर नर्कों और चौरासी में चले जायंगे। तब अनेक भोग योनियो में चले जायेंगे। तब मनुष्य शरीर तो मिलता नही।

मनुष्य शरीर सबसे महान है

तो यह मनुष्य शरीर सबसे ऊंचा और महान है। यह बहुत अमोलक है। इसे नष्ट नहीं करना है। इसी से वह परमात्मा मिलता है। जब तक यह नहीं मिलेगा तब तक वह कैसे? मिलेगा कैसे?

इसलिए यह रूप तो है ही मुझे विश्वास है कि बिना इसके वह नहीं मिलेगा। लेकिन कृपा कर दीजिए तो जरा उसकी भी झलक ले लूं।

यह रूप मनुष्यों को चेताने के लिए है

मनुष्यों को चेताने के लिए। उस रूप में तो आप हमेशा रहते हैं। यह मानव रूप तो कभी कभी उसे बताने के लिए आयेगा। लेकिन हमने तो उसे देखा नहीं है। अबकी बार इसको देखा है। दया करके यह तो देख लिया है। उसको भी दिखा दीजिए। इसके द्वारा लखा दीजिए। यह मांग है। उस रूप में तो आप सदा रहते हैं। यह तो हमेशा रहेगा नहीं। दिखाई देता है कल चला जायेगा। पर वह रूप तो हमेशा रहेगा। उस रूप में आप हमेशा रहते हैं। वहां बसते हैं।

यह भी भेद सुना मैं तुमसे।
सुरत शब्द मारग नित गाओ।

यह भेद भी तो आपने ही बताया तब मैंने जाना

अब प्रेमी भक्त कहते हैं इसका भी रहस्य, इसका भेद आप ही से सुना है। और किसी और से नहीं सुना। वह भी रूप महापुरूषों से ही सुनने को मिला है। यह भेद कहीं इधर उधर कहीं किताबों को पढ़ने से नहीं आयेगा। जब यह तो आप ही से सुनने को मिला है तब यह इच्छा जगी है कि उसका भी दर्शन हो जाय। उनकी दया मेहर से।

बड़ा निर्मल मार्ग है।

तो यह मार्ग तो बड़ा ही निर्मल पवित्र और शुद्ध और सरल है। इसका भेद महात्माओं और महापुरुषों के चरण में बैठ कर ही मिलता है। यह मूल चीज है। बाकी तो सब मार्ग छाछ है। छाछ होती है। घी निकाल लो। और उसमें पानी मिला करके मट्ठा रह जाता है। उसे छाछ कहते हैं। बाकी सब मार्ग छाछ हैं उनमें कोई रस नहीं है। वैसे छाछ को पीजिए तो लोग कहते हैं बड़ा पेट को फायदा करता है।

भक्तों को सब चीजें स्वाभाविक मिलती हैं।

तो यह सब चीजें जो संसार की हैं उस दर्शन के सामने उसके दीदार के सामने कुछ भी नहीं है उसमें तो सब कुछ है। भक्तों को यह सब चीजें स्वाभाविक मिल जाया करती हैं। उसकी मांगने की चीजें अपने आप आती हैं। शरीर रक्षा के लिए, शरीर काम के लिए, शरीर हिफाजत के लिए। यहां में रहने के लिए ये चीजें वैसे ही मालिक अपने आप बख्श देता है। अपने

Scanned with CamScanner

आप दे देता है। कृपा कर देता है, लेकिन आप जल्द बाजी, जल्दी से जल्दी अधीर होकर घबड़ाकर कि नहीं मिलेगा। और मांगने लगते हो। और असली मांग छूट जाती है। नकली मांग में उलझ जाते हो, असली मांग मांगते नहीं हो जिससे सब कुछ हो जाय। नकली मांगे मांगने लगते हो। यह महापुरुषों ने आपको बताया और जब बता दिया, आपको याद आ गई समझ आ गई तब असली मांग मांगने लगे।

नामदान मूल है बाकी सब छाछ है

अभी मैं लोगों को नामदान दूँगा। जो लोग नामदान लेने के लिए आए हैं उनको नामदान दे दूंगा। वे यहां से निराश होकर के नहीं जायेंगे। यहीं सत्संग समाप्त होने के बाद होगा।

काशी के कार्यक्रम में सब लोग रहेंगे। चाहे वह राजस्थान के हो, मध्य प्रदेश के हो, गुजरात के हों, महाराष्ट्र के हों उत्तर प्रदेश के हों। हरियाना के हो, पंजाब के हों। कहीं के भी हों। सभी लोगों को बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि काशी का कार्यक्रम अपना ही कार्यक्रम है। हर व्यक्ति इसको अपना समझे। क्योंकि इतना बड़ा कार्यक्रम अपने धर्म और कर्म का अपना काम है। भक्तों से अपने अपने समय में कृष्ण के वक्त में राम के वक्त में। मुहम्मद के वक्त में ईसामसीह के वक्त में। तुलसीदास के समय में मीरा के समय में। गोस्वामी जी महराज आए थे उनके वक्त में, या और और किसी के वक्त में अपने अपने भक्तों ने काम करके दिखाया।

आगे लोग उर्दू में लिखेंगे

अरे हमको क्या शरमा है? हम एक नाचेंगे, कल दो नाचेंगे, । परसों चार नाचेंगे फिर हजार नाचेंगे। फिर लाख नाचेंगे। फिर दस लाख दस करोड़ नाचेंगे। फिर बीस करोड़ नाचेंगे। अगर आप नाचने लगे तो सबको नाचना सिखा देंगे।

आपने देखा होगा। कहीं हिन्दुस्तान में चले जाइए आप। Pay तो कोई देता नहीं। तनखाह तो कोई देता नहीं। बाबा जी तो कुछ देने वाले यहाँ कुछ हैं नहीं कि आपको कुछ दे दें। दे करके कुछ काम करायें। लेकिन हिन्दुस्तान में देखिए आप। पेड़ों पेड़ों पर। अभी तो सड़कों के पेड़ों पर दिखाई देता है। लेकिन बाग बगीचे भी नहीं छूटेंगे। अरे आप घबड़ाए नहीं। यह देखें कि मुसलमान जो बाबा जी का यह सन्देश सुनते हैं? अपने कलाम में, अपनी उर्दू भाषा में पेड़ों पर बगीचों के पेड़ों पेड़ों पर लिख डालेंगे आप यह देखिए। मुसलमानों को देखिएगा आप। जो हिन्दुओं से नफरत करते थे, या हिन्दू मुसलमानों से नफरत करते थे। अभी आप उनको देखिये। एक पेड़ को नहीं छोड़ेंगे। ये वह कलाम हैं यह तो वह शब्द है वह वाक्य है जो हमेशा सृष्टि में समय आने पर लोगों को बता देते हैं।

एक पेड़ को नहीं छोड़ेंगे। ये वह कलाम हैं

तो हमको नाचना है। क्या है? स्त्री पुरूष क्या किसी को? मीरा बहुत बड़े धनाढ्य घर में थी। लेकिन जब घर से निकली और नाचने लगी तो

नाचन निकली बावली

तो फिर क्या काम है? मालिक के नाम पर नाचने निकले तो आँगन टेढ़ा क्या?

अरे, नाच न जाने बावली कहे आँगन टेढ़ा।

जब नाचना नहीं जानती तो क्या कहती है कि अरे भाई आंगन सीधा कर दो। तो सीधा क्या कर दें। नाचना जानती है तो नाच ले। सीधा क्या? वह तो सीधा है ही। नाचना नहीं आता है तो बहाने बाजी।

Scanned with CamScanner

काशी में आपको सब देखने सुनने को मिलेगा

तो कोई बात नहीं, आप घबराये नहीं। काशी में आपको देखने को मिलेगा। उधर में आप जब काशी में आ रहे हैं तो आपको देखने को मिलेगा। दो करोड़ नर नारियों से ऊपर काशी में गंगा तट पर उस पार रेती पर। जहां कोई मकान नहीं। रेतीला मैदान। उस मैदान में यह सब कुछ दृश्य आप देखेंगे। और उनका सच्चा जो आनन्द है, सच्चा जो खेल है वह भी आपको देखने को मिलेगा। तो काशी की तैयारी आप करें। यहां तो आप मना करने पर भी नहीं माने और आ गये। और काशी तो आपको बुलाया गया है।

यहाँ तो मना किया था

यहाँ तो मना किया था कि भाई, मथुरा न आना। पानी का कोई साधन नहीं है। वहां ऐसे ही है। थोड़े से लोग आ जायेंगे गुरु महराज की कुछ थोड़ी बहुत याद कर लेंगे। सादगी से कर लेंगे। क्यों कि बहुत दिनों तक बाहर रहे।

जेल में लोगों ने कहा बीसों साल रहना पड़ेगा।

और जेल में भी रहना पड़ा। और आपको भी जेल में रहना पड़ा और आपको भी डण्डे खाने पड़े। मुसीबतें खा करके। बहुत लोगों ने डरवाया कि तुमको फांसी हो जायेगी। और तुमको बच्चे-बच्चियों, बीस साल तक तुमको जेल में रहना पड़ेगा। क्या पता बीस साल तक आसमान टूटे, या जमीन फट जाय। या कोई रहे, न रहे।

अरे, आज की क्या खबर, कल रहे न रहे। रास्ते चलते में क्या हो जाय? और कहता है और १०० बरस की बात करता है। अभी क्या होने वाला है। बीस साल की बात करते हो।

कल की खबर नहीं और २० साल की बात करता है

वे लोग जेलों में डरवाते थे लोगों को। २० साल तक नही अब छूटकर आओगे। और कल की खबर नहीं इतने दिनों की बात करते हो। धड़ाक से तख्ता पल्टा। ऐसा गिरा कि नीचे से ऊपर धड़ाक से गिरा। देखा होगा आपने। और अभी क्या तख्ता पल्टा? अभी आपने पलटने को क्या देखा? वह तो काशी में सुनने को मिलेगा। यहां आपको क्या बतायें?

काशी में सब मिलेगा।

तो काशी में आपको देखने को, सुनने को, समझने को मिलेगा। बाबा जी ने तो कह दिया कि हम अब कुछ नहीं बतायेंगे। बताने वाली बातें सब पहले बता दी गई। अब तो बस इशारे मात्र होगा। समझने वाले समझ जायेंगे। और जो नहीं समझेंगे वे अपनी आंखों देखेंगे तब समझ लेंगे।

जो कहना था वह कह चुके

इसलिए आपको बुलाया नहीं था। आ गये हमारे शिरोधार्य। हमारा अहोभाग्य। और भगवान की आप पर वर्षा होने वाली दया मिल रही। इसलिए कोई बात नहीं है। आप यहां से जाने पर काशी की हर प्रकार की तैयारी में लग जांय। हमको अब और कुछ कहने की जरूरत नहीं हैं। जो कुछ भी, मोटे शब्दों में था वह कह दिया।

धर्म की स्थापना होकर रहेगी

धर्म की स्थापना होनी है। कितना भी लोग दुनियां में चिल्ला लें। धर्म की स्थापना आवश्यम्भावी है। बाबा जी ने अहमदाबाद में कह दिया है कि देवता चारो तरफ पहरा दे रहे हैं। उन्होंने कहा है कि आप लोगों को सन्देश-पैगाम लोगों को सुनो दो। तुम्हारा काम लोगों

को सुनाने का है। मानना न मानना उनका काम। और उन्होंने कहा—जब न मानें तो मुझे बता देना। तो मेरा काम सुनाने का है। और न मानेंगे तो मैं उनसे कह दूंगा कि यह लीजिए अपनी सूप तुम्बक। यह अपनी अठरी गठरी, मोटरी आप लीजिए। हमको जो आदेश दिया था पूरा कर दिया। सारी दुनियां में आपका पैगाम सुना दिया। और प्रेमी भक्तों के द्वारा सबको पहुँचा दिया। अब लोग माने न माने। आप जानें और वह जाने।

देवता हैं और वही सब करेंगे

तो वे देवता लोग। ऐसा तो है नहीं कि देवता नहीं हैं। अगर किताबें हैं महात्मा हैं। आसमान और जमीन है। तब तो देवता भी हैं। और किताब, महात्मा नहीं, **आसमान और** जमीन नहीं है तो ठीक है। **मत मानो। फिर** बाद में मान लेना।

मानना तो आप को होगा ही

वह तो बाद में मानेगें ही। एक तमाचा लगेगा। जमीन पर पैर होगा ऊपर मुंह जमीन पर। अपने आप मान लोगे ? फिर क्या बात ? बाद को बात को समझ लेंगे।

बुराई को छोड़ दो अच्छाई को अपना लो

तो यह कोई बात नहीं है। जो समझदारी की बात है वह यह कि बुरे काम को छोड़ना है। अच्छे कामों पर चलना है। अच्छे काम करना है। बुराई को छोड़ना है। धर्म के रास्ते को पकड़ना है। अधर्म को छोड़ देना है। सीधी साधी बातें हैं। खान पान को शुद्ध करो। बुरे खान पान से बचो। अच्छे खान पान। दूध, दही, मक्खन फल फूल। सब्जी अनाज खूब खाओ। अच्छे कपड़े पहनो। अच्छी भाषा का प्रयोग करो अच्छे कानों से सुनो। अच्छे विचार करो। मानव मानव के काम आओ। एक दूसरे की सेवा करो। अगर मानवता हर जीजें मानवता की हम सबमें उतर आई तो सब चीजें इस पृथ्वी पर आकर के इस तरह फलने फूलने लगेगी कि जिस तरह से पहाड़ो पर बिना पत्तियों के पेड़ दिखाई देते हैं। और जैसे ही वर्षा आई कि सब पहाड़ों के पेड़ हरे भरे हो कर बिलकुल पहाड़ों को ढक लेते हैं। इसी तरह से मानव अगर वास्तव में सर्व सम्मति से मानव सुख चाहता है तो उसे धर्म और कर्मों पर चलना, स्वधर्म धर्म का पालन करना। जो मानव धर्म है। तभी मनुष्य सुखी हो सकता है। और १८ महीने में जो कुछ भी बाबा जी ने कहा वह आपके सब सामने है। यह कोई खाद डालने से नहीं है। खाद तो आप पहले भी डालते थे। बहुत बटती थी। मुफ्त में दी जाती थी। हम भी जानते हैं। जब १२ रु० की बोरी मिलती थी। १८ रु० की बोरी थी। २८ की हो गई २५ की हो गई। एक बारगी धड़ाक से ४५ की हो गई। और रातोरात १०५ की हो गई।

देवता बरक्कत देते हैं

तो खाद तो आप बहुत डालते थे। और ३०० रु० बोरी खरीदते थे आप और डाला। लेकिन इतना अनाज, इतनी चीनी, इतना गुड़ आपको कभी सुनने को नहीं मिला। जमीन कोई रबड़ थोड़े ही कर दी गई। जमीन तो वही है। पहले भी आप जोतते रहे। अब भी जोत रहे हैं। लेकिन देवताओं की प्रसन्नता है उसको आप लो। और देवता आपकी प्रसन्नता लें आप देवता की लें। वे आपका काम करें आप देवताओं का काम करें। दोनों एक-दूसरे का काम करने लगे तो काम हो जाय। अगर आप उनका काम नहीं करेंगे और वे आपका काम नहीं करेंगे। आप उनको नहीं मानेंगे, वे आपको नहीं मानेंगे तो कैसे काम बनेगा ?

Scanned with CamScanner

देवताओं की कृपा से उपज बढ़ी

इसलिए यह सब चीजें हैं। ऐसे वैसे नहीं है। यह सब तुमको पहले सुनाया गया। उनको बताया गया। प्रसन्न किया गया। और आंख के द्वारा आपको दिखाया गया। ६ महीने पहिले बताया गया। ३ महीने पहिले आपको बताया गया। और आपको ८ महीने पहिले से बताया जा रहा है। तो यह सब बातें आप देख रहे हो, सुन रहे हो। तो बात तो समझ में आनी ही चाहिये।

परमात्मा की दया मिलेगी

तो यह प्रभु की दया है। कृपा है उसकी। तो यह सब अनुभव, सुनने वाले, न सुनने वाले विश्वास कर रहे हैं। और करने लगेंगे। समय आते आते, आते आते वह समय आने पर सबको अकल आ जायेगी। घबराओ मत। वह परमात्मा कृपा दया करेगा। ऐसी बात नहीं है कि नहीं करेगा।

इस जमीन पर सब भोजन प्रसाद है

तो आप सब लोग हमेशा, सद्भाव के साथ काम करें। अभी प्रसाद आ गया होगा। या अभी आ जायेगा। पुराने आश्रम पर बना है। जो कुछ भी बना है और जो कुछ भी यहां मिलेगा उसे लेना और साथ में भी ले जाना। उसे विधिवत साथ में रखना। और जो बना रहे हो खा रहे हो उसमें भी कोई हर्ज नहीं वह भी प्रसाद ही है।

इस जगह पर आप दो बजे तक ढाई बजे तक रह सकते हैं। लेकिन मैं आप को अभी से छुट्टी देता हूँ कि आप बगैर पूछे हुये चल दें। अब आप को यह पूछने की जरूरत नहीं है। आज २४ घन्टे का यह कार्यक्रम था। क्योंकि मुझे भी जाना है। यह बहुत बड़ा कार्यक्रम है। दो करोड़ से ऊपर ऊपर आदमी वहां (काशी में) तो प्रबन्ध होना जरूरी है आप के लिए।

अपना काम समझ कर करें

तो मैं भी एक दिन यहां रह कर के प्रस्थान कर जाऊंगा बस कल का दिन ही बाकी है यह सब सामान वामान उखाड़ूगा इसमें जो जिसका है उसको पहुँचा दिया जायेगा। मैं भी यहां से चल पड़ूंगा। मेरे सामने अधिक से अधिक आदमी १८-२०-२५ आदमी छोड़कर सभी आप लोग मेरे सामने बिदा हो जाइये। मैं अपने सामने समझूंगा कि कल आप अपने घरों को पहुँच जाइयेगा सकुशल। और अपने अपने काम में लग जायेंगे। सब लोग अपने अपने क्षेत्रों में जा कर काम में लग जायेंगे। और जो काम करते हैं खेती का या अन्य काम करते हैं सर्विस का काम करते हैं। सेवा का। उसमें जो भी आप को समय मिल जाय। इतवार की छुट्टी में। घन्टे दो घन्टे जो आप को समय मिल जाय, वह भी सेवा का कार्यक्रम करें। अपना समय जरूर दे दें। अपना सहयोग दें। यह कोई जरूरी नहीं है कि स्वामी जी जब करें तभी कुछ होगा, तो नहीं। अपना काम समझोगे तो कोई परेशानी नहीं। अपना काम आदमी समझ ले कि मेरा ही काम है तो सब काम बन जायेगा। यही समझ लो कि ये मेरे ही हैं।

जब हम समझते हैं कि अपना काम है। हम समझते हैं कि आप अपने हो और आप समझ लो कि बाबा जी मेरे हैं तो फिर किस बात की कमी।

माता पिता के प्रति पुत्र का कर्तव्य

बाबा जी आप के हैं माता पिता पुत्र की तरह से है तो फिर कमी किस बात की है। फिर यह है कि पुत्र पिता के लिए सब कुछ करता है।

Scanned with CamScanner

पिता पुत्र के लिए सब कुछ करता है। वह घर में रहता है। जनम भर कमाया किसके लिए? पुत्र के लिए। जब बड़ा हो जाता है तो उसकी जिम्मेदारी होती है किसके लिए। अब वह सेवा करे। सब कुछ तो उसका हो गया। जब पिता के थक जायें पैर और हाथ तो पुत्र को चाहिये कि अपने पिता की सेवा करें। माँ की सेवा करें। यह तो लोक नीति में है। जब यह नहीं रहेगा तो परलोक कैसे बनेगा। यह भी सेवा जरूरी है। दोनों सम्बन्धों को निभाना बहुत ही जरूरी है।

आज शाम को लोग चले जांय

आज शाम के वक्त में सब लोग तैयार हो कर नर नारी बच्चे बच्चियां सब अपनी अपनी सुबिधा के अनुसार जो बस से जिस तरह से आ गये वह चले जायेंगे। थोड़े लोग रह जायेंगे। वह लोगों पीछे से यह सामान वामान इकट्ठा कर के सेवा करने वाले हैं। सवादार हैं। वह मतलब यह है कि जल्दी से समेंट लेगे। मैं भी कल तैयार हो जाऊंगा क्योंकि रास्ते में दो कार्यक्रम हैं। और मुझे काशी पहुँचना है। मुझे उस कार्यक्रम में जा कर के काम तो करना है।

कोई जाने लगे तो कान में जयगुरूदेव नाम बोलो

और यह भूमि है स्वामी जी महराज की इस पर आप बैठ कर ध्यान करते रहो। बीच में अगर किसी का शरीर छूट जाय तो यह बाबा जी हर वक्त आप के लिए तैयार है। उसके लिए कोई नही। अगर कोई नहीं आया और किसी को यह भी हो जाय कि मेरा रिस्तेदार है तो उसे और कुछ करने की जरूरत नहीं है। वह उसके कान में चलते वक्त में जयगुरूदेव, जयगुरूदेव बोले मैं उसके लिए भी तैयार हूं। बिलकुल मैं हर तरह से जी सुबिधा आप के लिए हो सकती है वह सब करने के लिए तैयार हूँ। मैं तो बराबर कहता रहता हूं। और जो अपने इस किराये क मकान से जो भी सेवा बन जाय। हर तरह की लोक की परलोक की उसके लिए हम तैयार रहते हैं।

मेहनत की कमाई में बरक्कत मांगो हम इसमें विश्वास करते हैं

किसानों से हमने साफ कहा। अपने अपने खेत में धान खड़ा हुआ है। इसमें ज्यादा से ज्यादा बिचार कर लो कि मेरे खेत में १५ मन या १२ मन होगा। बाबा जी से ५ मन और ले लो। हम प्रार्थना करेंगे जल पृथ्वी, अग्नि वायु आकाश देवता से वह आप को उसी में दे देंगे। लेकिन बाबा जी से कहो बोरा ला कर दे दें तो यह न होगा। यह काम नहीं होगा। मैं तो उसी बहाने से जल पृथ्वी अग्नि वायु आकाश से प्रार्थना करूगा कि इन्होंने मेहनत को उसका फल ज्यादा दे दीजिए। ये अपने कर्तव्य में पूरे रहे। और आपकी कृपा मिल जायेगी। तो आपका सहारा भी लिया और खर्च भी किया। मैं इसमें विश्वास करता हूं। ऐसे नहीं कि हराम की कमाई। ना, कभी नहीं।

बरक्कत बहुत बड़ी चीज है

हमेशा काम करो और उसका विश्वास करो कि इसी में वह बरक्कत दे दें। हाँ यह हमने काम किया है। उसकी कृपा हो जाय दया हो जाय तो बरक्कत हो जाय। और बरक्कत बहुत बड़ी चीज होती है। एक पैसा लाख के बराबर, लाख पैसा करोड़ के बराबर। करोड़ पैसा अरबों के बराबर। अगर बरक्कत मिल जाय भगवान की उसकी कृपा हो जाय। दया दृष्टि मेहरबानी हो जाय तो बहुत बड़ी चीज है। बरक्कत ही तो सब चीज है। कोई काम किये तो उसकी बरक्कत खतम हो गई। अच्छे काम करने लगो फिर बरक्कत साथ में हो जाय। यही तो होता है। और क्या होता है।

महात्मा कामना करने की ही प्रेरणा देते हैं।

अरे, महात्मा और क्या बताते हैं। काम ही बताते हैं आपको, कर्तव्यहीन नहीं करते। यह नहीं कहते हैं कि कोई काम नहीं करो दफ्तर में। कोई दूकान का काम कोई खेती का काम मत करो। नहीं करोगे तो कैसे? फिर तो कर्म ही मिट जायेगा। और जो आजादी दी है वह भी खतम हो जायेगी।

लोगों ने आजमाइश कर लिया है

आजादी सबसे बड़ी है मृत्यु लोक में कर्म की। अच्छा बुरा काम। इसीलिए परमार्थ की आजादी है आपको। अभ्यास करो। इससे बड़ी और क्या चीज है? मरने के पहले प्रभु को प्राप्त कर लो।

इसलिए हर विश्वास हर तरह से आप अपनी अपनी आजमाइश कर रहे हैं। बहुत से कर चुके है। बहुत से समझ गये हैं। समझने की कोशिश कर रहे हैं। बहुत से निकट आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। बहुत लोग कितने काशी पहुँचेंगे नये लोग। यह तो आपको वहां देखने को मिलेगा समय पर। बड़ी तैयारी हो रही है।

भेष की पूजा करो

लेकिन हमको तो सुनने को मिला है कि कैलाश में महात्मा भेड़ के बाल लगा रहे हैं। भेड़ों के बाल। सिर में बांध रहे हैं, गूथ रहे हैं। इतने इतने बाल वाले महात्मा वहां काशी में देखने को मिलेंगे कि जटा जूट बाधे होंगे बहुत अच्छे से। भेड़ों के बाल, आपको बांध रहे हैं और बड़े बड़े जटा-जूट जैसे पगड़ी होती है। जैसे राजस्थान में बांधते हैं। ऐसे खोलेंगे और फेंक देंगे उधर। लोग पूछेंगे कि महराज आपकी कितनी उमर है? कहेंगे हजारों बरस की होगी।

पूजिये भेष। आपको क्या करना है? भेष की पूजा करना। उन्हें प्रेम से बुलाओ। आदर से बैठाओ। और पानी मिलाओ। वह काम क्या है? भेष की पूजा। गुण हो गुण ले लो। और तुम्हें क्या करना है।

गोस्वामी जी महराज ने कहा कि

पूजिए भेष सकल गुण हीना।

यानी भेष को पूजो। और फिर यह है कि अगर वे अच्छे नहीं है तो

उघरे अन्त न होय निबाहूं।

किसी की बुराई नहीं देखनी है

उसके जिम्मेदार वे हैं आप क्यों जिम्मेदार बनते हैं। कि वह खराब वह खराब। वे खराब हुआ करें आपको तो खराब से कोई मतलब नहीं। कोई भी आ जाय। कोई भी भेष वाला हो, प्यसा हो। कैसा भी हो उससे आपको क्या करना है। बाल को, दाढ़ी को इन सबको तुम्हें नहीं देखना है। यह अपने को कुछ नहीं। अपना काम करो।

मानव धर्म में दया की स्थापना होनी चाहिये

मानव धर्म में अगर दया आ गई और दया की स्थापना हो गई तो सब कुछ हो जायेगा। राम ने इतना बड़ा उपदेश दिया। क्या किया कोल भीलो को। वही दया दी थी। और दया की स्थापना हो गई थी। तो कितना बड़ा काम हो गया था।

ग्वाल बालों में क्या वहां कोई स्कूल खोले थे। मगर दया की उन्होंने। वह दया दे दी और स्थापना हो गई तो बहुत बड़ा काम कर दिया। और क्या स्कूल खोले। यह ऐसा स्कूल है कि उसकी दया मिल जाती है और काम हो जाता है।

खिचड़ी बहुत अच्छी बनती है

तो मैं अभी नामदान एक ओर बैठाकर जो

Scanned with CamScanner

नाम यह लेना चाहते हैं उन्हें नामदान दूंगा। और लोग अपने अपने स्थान पर चलेंगे। जब साढ़े ग्यारह पौने बारह पर जो प्रशाद बंटेगा सब लोग उसे ले जायेंगे। जो कुछ मिले उसे लो। उसी में जो आपके पास है उसे मिला लो। सब मिश्रित कर लो। खिचड़ी सब मिली हुई बड़े आनन्द की होती है। उसमें मूली डाल दो यह डाल दो वह डाल दो। बहुत बढ़िया खिचड़ी बनती है।

उसमें यह प्रसाद मिला दो वड़ा बढ़ियां रस बन जायेगा। उसमें ऊपर का नीचे का सब रस बनेगा। कुछ तुम्हारी भावनाओं का, मालिक की दया का यह सब ऐसा बढ़िया बनेगा कि क्या कहना। बड़ा बढ़ियां काम बनेगा। इसी को कहते हैं प्रसाद। प्रसाद बड़ी चीज होती है। होती तो इतनी ही है। जरा सा होता हैं मगर उसमें बड़ी शक्ति छुपी होती है।

तो काशी की सब तैयारी करना। बोलो जयगुरूदेव। जयगुरूदेव।

सफेद झण्डा स्वागत करता है। प्रदर्शन नहीं करता

गुजरात के लोग आये उन्होंने सुनाया कि अखबारों में निकला है कि बाबा जी के आदमियों ने किसी पर पत्थर फेका। बाबा जी के आदमी किसी पर पत्थर नहीं फेकते। और यह जो झन्डा है यह सफेद झन्डा प्रदर्शन नहीं करता। यह सफेद झन्डा शुभ सूचक चिन्ह है। शुभ लक्षण है। धर्म के, सतयुग आगवन के यह शुभ लक्षण हैं

और आप ने आज तक सारे बिश्व में यह कभी नहीं सुना होगा कि सफेद झन्डे से किसी ने प्रदर्शन किया। काले झन्डे से तो प्रदर्शन किया लेकिन सफेद से नहीं। और आप की इतनी भी बुद्धि नहीं है सफेद झन्डे मे कोईप्रदर्शन करेगा। सफेद झन्डा स्वागत करेगा।

अखबार वाले गलत छापे हैं

सफेद्छ झण्डा स्वागत करेगा। सफेद झन्डे प्रदर्शन नहीं करते। जिसके हाथ में सफेद झन्डा होगा वह स्वागत करेगा। वह प्रदर्शन नहीं करेगा। इसको हमेशा याद रखना। हमारे कोई आदमी पत्थर नहीं फेकते। जो लोग अखबारों में इस तरह की बात लिखते हैं वे बिलकुल नादान हैं। बिलकुल भुले हुए हैं। उनको इस बात का ज्ञान ही है जरा सा भी ज्ञान नहीं।

जब मार पड़ी तब तो पत्थर नहीं मारा

जब लड़के लड़कियों पर जब लाठीयां पड़ रही थीं उन देबियों पर तब तो किसी ने पत्थर नहीं मारा। इतनी इतनी मारें पड़ी कि लोगों की आंखो में खून झलकते थे। लेकिन किसी ने कभी पत्थर नहीं मारा। अब पत्थर से मारने का क्या काम है। लेकिन लोग चाहते हैं बदनाम करना।

इतनो को झूठ कैसे कर दोगे

दो करोड़ लोग इस मैदान में उतर गये और बाबा जी ने दो करोड़ अस्सी लाख को नामदान दिया। पचास लाख बूढ़े बृद्ध होंगे उनको छोड़ शेष होंगे दो करोड़ तीस लाख। दो करोड़ तीस लाख आदमी जिस मैदान में होंगे आप सबको झूठा कर देगे।

१० कार्यक्रमों में १४ लाख को नामदान दिया

मैंने अभी ५ दिनों का दौरा किया है गोन्डा जिले में बलरामपुर और फिर उसके बाद शाहजहांपुर। दस कार्यक्रम किए चौदह लाख को नामदान दिया। ५ दिन में दस कार्यक्रम। सुबह शाम। १४ लाख को नामदान दिया। भीड़ कितनी हुई होगी।

यह अखबार पहले नहीं लिखेंगे

यह तो नहीं कोई अखबार में लिखता है कि

Scanned with CamScanner

इतनी भीड़ हुई। क्या हिन्दू–मुसलमान। स्वारथ कब तक स्वास्थ? स्वार्थियों का अरे, चिमगादड़ कब तक यह समझते रहे कि सूरज निकलने आ रहा। तो ज्यों ही इधर सूरज की किरण फूटी कि चिमगादड़ की फट से आँख बन्द हो गई। और वह पड़ा हुआ है। लटका रहेगा दिन भर पेड़ पर। तार पर। कहीं दिन भर पड़ा रहेगा। और जब सूरज डूब जायेगा तो कहीं रात में उसकी आंख खुलेगी। वह उलूक जिन्होंने कभी सूरज को देखा ही नहीं और वह उल्लू जो महापुरुषों को कभी जानते ही नहीं। जिनके जीवन काल में यह कभी नहीं आया कि महात्मा किसको कहते हैं? धर्म किसको कहते हैं। भगवान किसका नाम है? उन बेचारों को क्या मालूम? वह तो उल्लू है।

हमारा आदमी ऐसा नहीं करता

तो हमारा कोई आदमी ऐसा काम नहीं करता है। न हम कभी ऐकी तालीम देते हैं। न शिक्षा देते हैं। हमारे तो झन्डे लोक समाज के हैं। सतयुग आगवन के लिए है जिसकी आवाज लगने जा रही है सारे देश में। अभी पूरी हो जायेगी। थोड़े दिन की और बात है। यह जो अखबारों में जो झूठ लिखा जाता है यह तो हम काशी में बतायेगें अभी नहीं बताएंगे।

काशी में जो जहाँ रहेगा वहीं सुनाई देगा

अब जो लोग अपने डेरों में रह गये वहीं से बैठ कर उनको सुनाई दे रहा। अपने अपने कैम्पों में बैठे हैं जहाँ उनका सामान है उनको बिलकुल साफ सुनाई देना है। अब की बार ऐसा इन्तजाम होगा। काशी में इतने करोड़ आदमी रहेगें तो ऐसा इन्तजाम होगा कि सब को। वह सारा ही मैदान भरा रहेगा वहाँ तो उसको उठने की जरूरत नहीं क्योंकि खाली तो रहेगा नहीं। वहां पर उठ कर आने की जरूरत नहीं। वह तो सब भरा रहेगा बिलकुल एक दम। वहीं लेट जाओ वहीं बैठ जाओ वहीं साधन करने लगो वहीं ध्यान करने लगो और मुश्किल से निकल कर नहाना पड़ेगा। हम सोचते हैं कपड़े कहां सुखाये जायेंगे हम कभी कभी सोचा करते हैं धोती कहाँ फैलाई जायेगी? क्योंकि इन बच्चियों की धोतियां तो बड़ी लम्बी होती हैं। कोई पैजामा तो है नहीं कि खम्भे पर डाल दिया जायगा।

तो धोती कहां सुखाई जायेगी? तो यह तो बड़ी मुश्किल है तो भाइं धोती गीली पहिर लेना और कहीं तुमको खाज होने लगे तो बाबा जी तुम्हे दवा बता देंगें। और क्या करें इतना ही इलाज कर सकते हैं और क्या किया राय? तो इस लिए सोचता रहता हूँ कभी कभी इन बातों को। तो काशी में आप सब आना। जयगुरुदेव।

जयगुरुदेव डायरी १९७९

पूर्व सूचना के अनुसार तीन साइजों में डायरी १९७९ छप कर तैयार है जिसके हर पृष्ठ पर जयगुरुदेव बाबा के कोई न कोई प्रेरक वाक्य उनके प्रवचनों से छांट कर छापे गये हैं। यह सुन्दर संग्रहणीय जयगुरुदेव डायरी बड़ी साइज में ३–५० रु० दो तारीख वाली बड़ी साइज में २–५० रु० छोटी पाकेट डायरी १–२५ रु० में प्राप्त हैं। ५० या अधिक डायरी एक साथ रेल से मंगाने पर रेल खर्च हम देगे हर दशा में मूल्य पहले मनीआर्डर से भेजं। एक दो प्रति मंगाने पर डाक खर्च २–५० रु० और भेजें। पता है-

व्यवस्थापक (डायरी)
२३,पाण्डेय बाजार आजमगढ़ उ०प्र०

Scanned with CamScanner

स्वामी जी का कार्यक्रम

परम पुज्य स्वामी जी महराज अक्टूबर में दांत की तकलीफ में मथुरा में ही रहे लखनऊ नहीं थे। मथुरा से चल कर अक्टूबर में १९ को आगरा, २० शिकोहाबाद २१ बसरेहर तथा पाली इटावा २२ करवावत क्योटरा इटावा २३ को सहारे, संदलपुर इटावा २४ कानपुर २५ कुआं खेड़ा जहानाबाद कानपुर २६-२७ और २८ को फतेहपुर के गावों में २९-३० को रायबरेली के क्षेत्रों में ३१ को लखनऊ रहे।

१ नवम्बर को उन्नाव २ को पुनः रायबरेली ३ को प्रतावगढ़ क्षेत्र में ४ को सुल्तानपुर रहे फिर स्वामी जी जौनपुर से काशी गये वहां यज्ञ की पूजा करके काम समझा कर पुनः मथुरा चले गए।

फिर स्वामी जी महराज १४ नवम्बर से २० नवम्बर तक गोन्डा बहराच तथा शाहजहांपुर में कार्यक्रम किये वहां से पुनः मथुरा लौटे २५-२६ को भरतपुर में सतसंग करके फिर मथुरा आ गये

८-९ दिसम्बर को मथुरा में भन्डारा था उसको निपटा कर स्वामी जी महराज १२-१३ को इटावा में दो सतसंग कार्यक्रम कर के काशी आ गये। वहां काम जोरों पर आरम्भ हो गया है। काशी से ही स्वामी जी १८ दिसम्बर को बलिया के देहात में तथा १९ ता० को मधुबन आकमगढ़ में सतसंग किये। दोनों जगह १-१ लाख लोगों को नामदान मिला। वहां से आजमगढ़ नगर होते हुये स्वामी जी काशी में रेती पर चले गये। अब स्वामी जी वहीं पर रह कर यज्ञ का मण्डप और सभी चीजें बनवा रहे हैं।

यज्ञ स्थल का पूरा क्षेत्र १० मील के फैलाफ में है। राजघाट के पुल से विश्व विद्यालय के पास उने पीपे के पुल तक फैला हुआ है। यज्ञ का मण्डप अहमदाबाद से कई गुना बड़ा है। सतसंग का मंच बहुत विशाल है तथा ५० लाख लोगों के बैठने की व्यवस्था है।

प्रेमी ग्राहकों को सूचना

जो पाठक गण अहमदाबाद में ग्राहक बने थे उनका वार्षिक चन्दा पिछले माह में ही समाप्त हो गया है यह अंक इस आशा में भेज रहे हैं कि आप काशी के यज्ञ स्थल पर वार्षिक चन्दा जमा करेंगे। अगला अंक वहीं हाथ से मिलेगा। जो विशेषांक होगा। डाक से नहीं भेजा जायेगा।

वार्षिक भण्डारे का संक्षिप्त वर्णन

योगस्थली पर पहुँचते ही दिल भर आया। आंखो में आंसू थे। गुरु महराज सामने ही तख्त पर विराजमान थे। पास में पहुंचे तो तो गुरु महराज कह रहे थे–

हजरत मुहम्मद के एक बाल की चोरी पर तो कितना काण्ड हो गया था। मेरे गुरू जी के तो सभी सामान लोग उठा ले गये।

बड़ा दर्द था। दिल भारी था। वहां पानी का कोई प्रबन्ध नहीं था। लोग कहीं से गगरी खरीद कर एक डेढ़ मील दूर से पानी लाकर उसी से खाना बना रहे थे। खुले में पड़े थे।

शाम को स्वामी जी महराज ने कहा ऊपर से चद्दर बांध लो। रात्रि में इतनी ओस पड़ी कि चद्दर भीग गया। पानी टपकने लगा।

रात्रि में ७ बजे से एक छोटा सतसंग हुआ प्रातः ५ बजे से पूजन हुआ। फिर सबेरे ८ बजे से सतसंग हुआ। सतसंग के बाद भण्डारे का प्रसाद बंटा। और स्वामी जी की आज्ञा हो गई कि लोग अब अपने घरों को वापस चले जांय। भण्डारे का भोजन पुराने आश्रम पर बना था। परम पूज्य स्वामी जी ने योगस्थली पर अब नया ट्यूबेल लगवाया है उसमें ८ ता० की रात्रि को पानी निकला। उसका सम्बन्ध टंकी से कर देने से सबेरे ६ बजे से पाइप में पानी आने लगा था।

Scanned with CamScanner

अमर सन्देश

सतपुरुषों के बचन और वाणी ही संसारी जीवों के लिये सदा से प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। इस लिये अपने जीवन में नया मोड़ दीजिये। अमर सन्देश के अनमोल बचनों को पढ़ कर प्रेरणा प्राप्त कीजिये और संतों का संग ढूंढ कर सतसंग कीजिये जीवन को सत्विक, प्रेमी और मानवी बनाइये। अमर सन्देश में छपे स्वामी जी महराज के अमर सन्देश व्यक्तिगत सामाजिक, मानसिक और आत्मिक क्रांति ला रहे हैं। आप भी इसे पढ़कर समय के संग आगे बढ़िये और इष्ट मित्रों को पढ़ाइये। यह समय की पुकार है।

—० सेवा भक्ति और साधन ०—

❀ गुरु आज्ञा, चाहे सैन में हो या बैन में, पालन ही उनकी सेवा है।

गुरुदेव की नीति, रीति और प्रीति का निरन्तर ध्यान रखना कहीं भी विरोध न आने देना ही भक्ति है।

परमानन्द की प्राप्ति के लिये दोषों का त्याग कर अन्तः करण को पवित्र बनाकर गुरु के एक एक शब्द पर कुर्बान होना ही साधन है।

: मधु संचय :

❀ शिवनेत्र आज भी मिलता है।

❀ शिवनेत्र प्राप्ति का गुरू मिलना चाहिये।

❀ सच्चा गुरु मिलने पर ईश्वर प्राप्ति सरल है।

❀ ईश्वर जीते जी मिलता है इसी मनुष्य शरीर से।

❀ गुरु आज्ञा को पूरा करना ही गुरु पूजा है। अपनी शक्ति लगा देने के बाद शक्तिमान प्रभु की ओर देखना ही प्रार्थना है।

Scanned with CamScanner

जयगुरुदेव अमर सन्देश

वर्ष २१ अंक ६ जनवरी १९७६

रजिस्टर्ड पत्र
Licence No. 1 Licenced to
Post without Prepayment

क्रमांक पुस्तक का नाम	मूल्य
१–साधक जिवन निरूपण	६० पैसे
२–याद रक्खो गुरु के बचन	४० पैसे
३–प्रति दिन के विचार	६० पैसे
४–परमार्थी उपदेश	७५ पैसे
५–सन्तमत में सच्चा निर्माण	६० पैसे
६–तुलसी वाणी	६० पैसे
७–यम लोकमार्ग	५० पैसे
८–ज्ञान रश्मि	५० पैसे
९–हम गुरु को कितना मानते हैं	०५ पैसे
१०–उपरोक्त ९ पुस्तकों की गत्ते की जिल्द ५ रु०	

(नाम पता यहां है)

ग्राहक संख्या ....9808........

श्री ....

पता

—: पद्य में :—

११–प्रार्थना चेतावनी संग्रह पूरी सजिल्द ३) रु० डाक खर्च कम से कम २)५० । पुस्तकों का सेट तथा प्रार्थना की किताब मंगाने के लिए डाक खर्च सहित मूल्य पहले भेजें । वी० पी० भेजने का नियम नहीं है ।

१२–स्वधर्म साप्ताहिक वार्षिक मूल्य ८) स्वामी जी की विचार धारा का साप्ताहिक समाचार पत्र स्वधर्म साप्ताहिक निकलता है जिसका वार्षिक मूल्य ८) तथा अर्द्ध वार्षिक मूल्य ४) इसका रुपया व्यवस्थापक स्वधर्म साप्ताहिक, २३, पाण्डेय बाजार आजमगढ़ के पते पर भेजें ।

रुपया भेजने तथा पुस्तकें मंगाने का पता—
व्यवस्थापक 'अमर सन्देश'
२३, पाण्डेय बाजार आजमगढ़

स्वामी और प्रकाशक—संत तुलसी दास जी महाराज, चिरौली सन्त आश्रम, कृष्ण नगर मथुरा के
के निमित्त अमर ज्योति प्रेस, आजमगढ़ में मुद्रित

Scanned with CamScanner